# सृजन यात्रा

मेहतर राम साहू के व्यक्तित्व -कृतित्व पर केन्द्रित



संपादक - डुमन लाल ध्रुव

BVP - 2630
28/1/19

10/11

# सृजन यात्रा

(मेहतर राम साहू के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित)

संपादक

डुमन लाल ध्रुव

*प्रकाशक*

साहित्य संगीत सांस्कृतिक मंच

मुजगहन, धमतरी (छ.ग.) 493773

प्रथम संस्करण
दिसम्बर 2011

पुस्तक–

# सृजन यात्रा

(मेहतर राम साहू के व्यक्तित्व
– कृतित्व पर केन्द्रित)

संपादक

डुमन लाल ध्रुव

प्रकाशक –
साहित्य संगीत, सांस्कृतिक मंच
मुजगहन, धमतरी (छ.ग.)

# सृजन यात्रा के संदर्भ में

पांडुका, राजिम, गरियाबंद मार्ग पर पड़ने वाला एक छोटा सा कस्बा है। नारायणलाल परमार, मेहतर राम साहू और ऊधोराम झखमार जैसे श्रेष्ठ रचनाकारों का विकास यहाँ हुआ। परमार जी की कविताओं, कहानियों में इस स्थान का चित्रण है। पैरी नदी की चमकती रेत के साथ उसके किनारे के सौंदर्य का चित्रण है। मेहतर राम साहू का जन्म इसी गॉव में हुआ था। एक मुसलमान परिवार में बच्चे का पालन पोषण किया। यहीं मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर वे आजीविका की ओर अग्रसर हुए। सन् 1958 से प्रारंभ इस सृजन यात्रा में उनकी रचनात्मक उपलब्धि इस प्रकार है – कउंआ लेगे कॉन ला, होही अंजोर, मया के बंधना, हमरेच भीतरी सब कुछ हे, बूडे में मोती मिलथे जी तथा कुछ और छोटी बड़ी अन्य रचनाएँ। लोक गीतों के प्रति गहरा अपनापन है। वे आस – पास की मंडली के लिए गीत भी लिखा करते थे।

परमार जी के अत्यन्त स्नेही थे। बागबाहरा में निवास करते हुए वे बराबर नारायण लाल परमार के संपर्क में रहे । कभी कभी वे धमतरी चले आते और अपनी लेखन संबंधि समस्या पर चर्चा करते। पत्र व्यवहार भी जीवन भर चलता रहा। परमार जी उन्हें देखते ही आत्मीयता से भर उठते थे।

सृजन यात्रा के दो खण्ड है। संस्मरण और छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध रचनाकारों द्वारा लेखन का मूल्यांकन छत्तीसगढ़ी कवियों में मुखर स्वर मेहत्तर राम साहू – नारायण लाल परमार, अपने व्यक्तित्व में सहज और अपने कृतित्व में निरभिमानी श्री मेहत्तर राम साहू – त्रिभुवन पाण्डे, भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण कृति विष्णु दर्शन – पवन दीवान। भाषा की

सादगी के कवि – जीवन यदु मेहतर राम साहू को याद करते हुए – रवि श्रीवास्तव, तिरिया जनम महा दुखदायी – डॉ. बलदेव साव, रत्ना बपरी उपर एक नजर – प्रभंजन शास्त्री, लोकरंग और वैचारिकता का संबंध – प्रभाकर चौबे, झोपड़ी में सिकंदर – रामेश्वर वैष्णव, होही अंजोर अंतस के रस ले भरे गगरी – गणेश यदु, छत्तीसगढ़ माटी के दरद उकरइया मेहत्तर राम साहू – चेतन भारती, कंउवा लेगे कांन ला एक दृष्टि में – श्रीमती नम्रता श्री कुमार सिंह, आत्मविश्वासी कवि मेहत्तर लाल साहू साहित्य समिक्षा – डॉ. विकास अग्रवाल । मेहतर राम साहू के कृतित्व से सभी प्रभावित थे। छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रति उनके अनन्य प्रेम की सभी ने सराहना की है।

यह महत्वपूर्ण सृजन यात्रा आपके हाथों में देते हुए प्रशंसा हो रही है। आप स्वयं इस यात्रा के साक्षी बनें और देखें कि एक छोटे से कसबे का कवि किस तरह बड़ा बनता है।

*डुमन लाल ध्रुव*

# अनुक्रमणिका

# तीन ठन मुक्तक मेहत्तर राम साहू जी

रामेश्वर वैष्णव

एक

बिपत कसनो रहय वो एक दिन
तो भाग जाही जी,
अपन मरजाद में रइही उही
देवता कहाही जी,
सरल मनखे ह कइसे मेंटथे
जिनगी के कठनाई,
मेहतर राम साहू जी हावय
संउहे गवाही जी,

दो

कहूं कंऊआ ह लेगे कान
त पिछू में नइ दउड़य
मिलय दुख कतको भारी, गुन
धरम ला फेर नइ छोड़य,
मेहतर राम साहू जी
सही रद्दा बताये हे,
न आफत म कभू टूटय, न
सुख में ये कभू अकड़य,

तीन

अपन गांवे में रहि के नाम
दुनिया में कमाहू जी,
मिले बरदान हे सिरजन के
तेला झन भुलाहू जी,
रखव जर ला अपन भुंइया मं,
अउ प्रकास ला छूलव,
पटंतर बन के बइठे हे
मेहतर राम साहू जी,

# छत्तीसगढ़ी कवियों में मुखर स्वर - मेहत्तर राम साहू

नारायण लाल परमार

छत्तीसगढ़ी काव्य में छठवें दशक के मध्य से ही एक नये चेतना स्तर का आभास मिलता है। यही वह समय है जब छत्तीसगढ़ी मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। उस समय पत्रिका में सर्वाधिक छपने वाले कवि – लेखक थे पाण्डुका निवासी सर्वश्री मेहत्तर राम साहू, रामप्यारे नरसिंह चैतराम व्यास, उधोराम झखमार और भागीरथी तिवारी। श्री साहू और श्री व्यास का लेखन बहुमुखी था। साहित्य की सभी विधाओं में वे लिखते थे। उनकी रचनाओं में एक ओर जहां ग्रामीण जनजीवन की विवशता और दैन्य भावना का चित्रण होता था वहीं दूसरी ओर नव निर्माण और आस्था की अभिव्यक्ति भी प्रकट होती थी। कहीं – कहीं हास्य व्यंग्य का स्पर्श भी मिलता था।

लगभग वर्ष भर चलने के बाद छत्तीसगढ़ी पत्रिका बंद हो गई तब लोग काफी निराश हुए। अपनी बोली के साहित्य के प्रति लोगों में जो उत्साह पल्लवित होने लगा था, वह मुरझा कर रह गया। साहित्य लिखा जाता रहा, मगर उसके प्रचार प्रसार के लिए कोई साधन नहीं था। तब रायपुर में आकाशवाणी का केन्द्र नहीं था। श्री चैतराम व्यास को उन्हीं दिनों आकाशवाणी भोपाल से छत्तीसगढ़ी कविता पाठ का निमंत्रण मिला था। तब से आज तक ये कवि छुटपुट लिख तो रहे हैं, लेकिन उनकी रचनाओं के मूल्यांकन के लिए कोई तैयार नहीं है।

छत्तीसगढ़ी के इन कवियों में जो स्वर आज भी मुखर है वह है श्री मेहत्तर राम साहू का, आज भी ये ईमानदारी से लिख रहे हैं। अपने भीतर जीवन की जो सुगंध है उसे जन – जन तब बांट रहे हैं। यश अपयश की चिन्ता से दूर छत्तीसगढ़ी के लिए अपना रक्त मांस तौल रहे है।

ग्रामीण परिवेश मे पला यह दिखने में भी ग्रामीण ही लगता है। नाम

में भी देहाती पन है, परन्तु वह लेखनी का धनी है। जो कुछ वह देखता, सुनता है, उसे ही ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त करता है। लोकगीतों से चलकर नई कविता तक पहुंचने वाले इस पूरे काव्य – संघर्ष में श्री मेहत्तर राम साहू की भागीदारी को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना द्वारा प्रकाशित पंचदश लोकभाषा निबंधावली में संग्रहित अपने निबंध छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य में डॉ. सवित्री शुक्ल की यह संक्षिप्त टिप्पणी दृष्टव्य है : – साहू जी समर्थ कवि हैं। "गोहार रोवइ़ नोहे, गीद आय" तथा "सुख – दुख" इनकी प्रसिद्ध कविताएं हैं। "रोवई नोहे," कविता से यहां कतिपय पंक्तियां उद्धृत की जाती है –

पापी पेट बर
ये समुन्दर बर
दू कौड़ी ले महंगा होथन,
तब थोर किन पाथन,
नस - नस के हाड़ा - हाड़ा के गांठ - गांठ ह ढील होगे हे
बासी खाथन तब पेट भरथे
पसिया पीथन, प्यास बुझथे

कविता किसी वर्ण, भाषा या क्षेत्र को लक्ष्य कर के नहीं लिखी जाती। वह युग की साक्षी है। जिसमें युग अपने विभिन्न स्वरूपों को प्रस्तुत करता है। छत्तीसगढ़ी कविता का जन्म भी मानवीय मूल्यों और सत्यों के आधार पर हुआ है यही कारण है कि वह सामाजिक भूमिका से सम्पन्न होती है एक ओर जहां वह सामाजिक विसंगतियों पर भावात्मक प्रहार करती है, वहां दूसरी ओर वह आदमी की चेतना के स्तर पर विसंगतियों से लड़ने के लिए तैयार भी करती है। श्री मेहत्तर राम साहू का कवि जागरूक है, वह जानता है कि आज के परिवेश में सिर्फ तटस्थ और ठंडी मुद्राओं वाली

कविता नहीं लिखी जा सकती। कविता यदि आज के यथार्थ से सीधे साक्षात नहीं कर सकती तो वह व्यर्थ हो जाती है : —

कपट के तेल म
        धोखा के दिया बरत हे,
गरीब - गंवार मनखे
        फांफा अस मरत हे।
बादर ला धरे हे जर
        भुइयां म फरे हे फर
इन खाहू उल्टा रूख के फर ला
        कतको लठरे,
पिच कोलो ओखर गर ला
        हारो इन हिम्मत।

श्री मेहत्तर साहू का कवि जब अपनी कविता के माध्यम से जीवन का यथार्थ चित्रण और विश्लेषण करता है तब समसामयिक घटनाओं और रीति नीतियों की निःसंकोच अभिव्यंजना से वह अपने आप को बचा नहीं पाता। उसने अपनी कविताओं में देश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों का यर्थाथ चित्रण समग्र मन से किया है। कहना होगा कि श्री साहू के काव्य में यथार्थवाद के सभी रूप अपनी पूर्णता के साथ अभिव्यक्त हो रहे हैं। जिसमें युगबोध की चेतना और बौद्धिकता का विकास है। परिवेश और परिस्थितियों से उत्पन्न जीवन के व्यतिकमों की निश्छल अभिव्यक्ति है : —

टेटका ह
        रंग बदले बर
कइसे भुलागे,
        जनता रसायन के
चढ़ते साठ
        फक फक ले पंड़रागे

जिहां - जिहां गुर
तिहां - तिहां चांटा
गुर सिरागे
चांटा के रेम थिरागे।

जंगल के बरहा
तने रिहिस गरहा
फेर कइसे का होइस ते
अपनेच सिंग म
फंसगे अलकरहा।

श्री साहू का कवि केवल अहम की अभिव्यक्ति के आलेखन में विश्वास नहीं करता। उसकी कविता में जीवन की प्रामाणिक गंध है। आयुष्मिकता है। वह किसी भी तरह की फारमुले बाजी पर भी विश्वास नहीं करता। वह तो कविता को मानवता की उच्चतम अभिव्यक्ति मानकर चला है। कहा जाता है कि सामान्य की अपेक्षा कवि कहीं अधिक संवेदन शील होता है। तरह – तरह के सपने देखता है। अपने सपनों के अनुरूप ही वह समाज को देखना चाहता है और जब इस साधन सम्पन्न युग में भी उसके सपने पूरे नहीं हो पाते तब उसका अंतरमन तिलमिला उठता है। अपनी कविता के माध्यम से वह जागरण का उद्घोष करता है। सामाजिक बुराइयों को बुहार फेंकने की अलख जगाता हे। व्यवस्था के दोषों को उजागर करता है। लेकिन इसके बाद भी जब कोई हल नहीं निकलता तब वह अपने आप में दहने लगाता है। बार – बार आत्म विश्लेषण करने लगता है। अपने चिंतन में वह अकेला होता है, फिर भी संतोष का आधार तो उसके पास होता ही है। मनुष्य – सत्य ही उसका मूलधन है। जिसकी रक्षा में वह प्राण

प्रण से जुड़ा हुआ होता है। दृष्टव्य है, सामाजिक चरित्र की स्टीक व्याख्या प्रस्तुत करने वाली ये पंक्तियां : –

नेकी अउ बदी
        हिसाब मांगत हे
बिसतहां सदी ला,
        पिरित पिता ह,
मया - दाई ल बताइस
        दया - क्षमा बहिनी मन
सुने खातिर
        कान ला टेड़ लिन,
धरम - करम
        दूनों भइया धलों उचकगे
कुरू परोसी ह
        गरीबी - दुसमन संग
ठुक ले आगे
        सुख सगा ला
ओतकी बखत
        मतासी आगे,
श्रद्धा गुरू के मन
        थक ले होगे
कोनो मन
नई करिन
        नेकी अउ बदी के हिसाब
परे हे, पोथी - पतरा, अउ किताब।

अस्तु! कवि किसी भी श्रोता का होकर सार्वभौमिक ही रहता है। वह अपने युग की उपज और आस – पास की स्थितियों का प्रत्यक्ष हिस्सेदार भी होता है। इस तरह श्री मेहत्तर राम साहू के कवि पर भी राजनैतिक,

धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव व्यापक रूप से दिखाई पड़ता है। चूंकि वह स्वयं विपन्न स्थितियों को झेलकर बड़ा हुआ है, अतएव उसमें दलित वर्ग के लिए विशेष सहानुभूति है। ग्राम्य वातावरण और परिवेश का उसने निकट से आस्वाद ही नहीं लिया बल्कि उसे छककर भोगा भी है। छत्तीसगढ़ की धरती के प्रति उसमें अगाध प्रेम है। यहां की नदियां और पहाड़ उसके आकर्षण के केन्द्र रहें है। यही कारण है कि उसका प्रकृति चित्रण भी जीवन्त बन पड़ा है।

छत्तीसगढ़ी की साहित्यिक संभावनाओं को यद्यपि अस्वीकार नहीं किया जा सकता, फिर भी सच्चाई यह है कि पारस्परिक संबंधों में एक शीत युद्ध चल रहा है। हर कवि खुद को निर्देश पुरूष मानकर चल रहा है। सारी दुनिया को एकता और स्नेह का पाठ पढाने वाला साहित्यकार यदि देर तक घृणा को नैवेद्य की तरह मानता रहेगा तो छत्तीसगढ़ की माटी उसे कभी माफ नहीं करेगी। हर एक को अपना दाय – भाग मिलना भी चाहिए श्री मेहत्तर राम साहू का कवि आत्मविश्वासी है। उसे कोई बड़ी प्रतिष्ठा नहीं चाहिए। वह तो अपनी साहित्यिक बिरादरी से केवल अंजुरी भर स्नेह का ही आकांक्षी है।

# अपने व्यक्तित्व में सहज और अपने कृतित्व में निरभिमानी

त्रिभुवन पांडेय

मेहत्तर राम साहू जी से मेरी मुलाकात छत्तीसगढ़ के यशस्वी कवि श्री नारायण लाल परमार के निवास में हुई थी। परमार जी धमतरी के टिकरापारा में स्थित पीटर कॉलोनी में रहा करते थें। आगे चलकर यही मकान उनका स्थायी निवास बन गया। मेहत्तर राम साहू और परमाजी जी वेशभूषा, स्वभाव, लेखन के प्रति समर्पण में एक जैसे थे। एक दूसरे के प्रतिरूप। बिम्ब प्रतिबिंब जैसे। परमार जी ने ही मेहत्तर राम साहू के लेखन संसार की जानकारी दी। दोनों ही रचनाकारों की रचना संवेदना पॉण्डुका ग्राम के खेतों, सघन होते जंगलों और पैरी नदी के किनारे विकसित हुई। परमार जी उस छोटे से ग्राम से बागबाहरा पहुँचे और देशब्यापी हो गए। मेहत्तर राम साहू पॉण्डुका से बागबाहरा पहुँचे और छत्तीसगढ़ के महत्वपूर्ण कवि बन गए। दोनो अपने व्यक्तित्व में सहज और अपने कृतित्व में निरभिमान।

मेहत्तर राम साहू की आस्था का श्री रामेश्वर वैष्णव जी परिचय देते हैं उसे इन पंक्तियों में देखिये --

बिपत कसनो रहय वो एक दिन तो भाग जाही जी
अपन मरजाद में रइही उही देवता कहाही जी
सरल मनखे ह कइसे भेंटथे जिनगी के कठनाई
मेहत्तर राम साहू जी हावय संउहे गवाही जी

और रचनाधर्मिता के मर्म को इन पंक्तियों में अंकित करते है

रखव जर ला अपन भुइंया में अउ प्रकाश ला छूलव
पटंतर बन के बइठे हे मेहत्तर राम साहू जी

लगभग छैः दशक में फैले मेहत्तर राम साहू जी का रचना संसार कविता, नाटक, कहानी, लेख आदि के साथ लोक संस्कृति के सुआ करमा

जैसे लोकप्रिय गीत – नृत्य माध्यमों तक व्याप्त रहा है। उन्होंने जीवन भर साहित्य और लोक संस्कृति की सेवा करते हुए छत्तीसगढ़ी रचना संसार को समृद्ध करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। वे अपनी पुस्तकों की भूमिका श्रेष्ठ रचनाकारों से लिखाया करते। अपने नाटक संग्रह की भूमिका लिखने का अवसर मुझे भी दिया था। अपनी प्रकृति से सम्मोहित उनकी कविता "पछताय बर परही" की बड़ी ही सुन्दर पंक्तियां हैं –

भिनसरहा ले डेहरी मां
गंगाजल ओइछ दो
किरन बेटी अवइया हे
हमर तुंहर जिनगी
पंडवानी गवइया हे

लोकसंस्कृति और अपनी प्रकृति के प्रति गहरे जुडाव के बाद ही ऐसी पंक्तियॉं उपलब्ध होती हैं जिसे श्रेष्ठ कवितांश कहा जा सकता है। उनकी आत्मीय याद, उनकी रचना सदैव हमें अपनी ओर आकर्षित करती रहेगी।

# भाषा की सादगी के कवि: मेहत्तर राम साहू

डॉ.जीवन यदु

छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ साहित्यकार मेहतर राम साहू छत्तीसगढ़ी के महत्वपूर्ण कवि थे। उनका प्रथम काव्य संग्रह 'कउंवा लेगे कान ला' सन् 1978 में प्रकाशित हुआ था। उनकी सहज सकियता का ही परिणाम है कि उस संग्रह के पश्चात उनकी अनेक किताबें प्रकाश में आई। मैं ऐसा मानता हूं कि मेहतर राम साहू कहानियों और एकांकियों के रचनाकार होने के बाद भी मूलरूप से कवि हैं। वे अपनी कविताओं में अधिक खुलते और फबते हैं। प्रतिभाशाली रचनाकार की यह खूबी होती है कि वह अपनी प्रतिभा से अनेक सृजनात्मक के धनी हैं मेहतर राम साहू। लेख क्षेत्र के अतिरिक्त उनकी प्रतिभा ने नाट्य के मंचो पर भी अपना लोहा मनवाया है। व 'तुलसीदल' लोककला मंच के अध्यक्ष के रूप में अपनी सांगठनिक क्षमता का परिचय देते रहे हैं। उनका एक रूप रामायणकर्ता का भी है।

'कउंवा लेगे कान ला' 21 वर्षों के बाद सन् 1999 में उनकी तीन किताबें प्रकाश में आयी – 'होही अंजोर' (गीत संग्रह) 'मया के बंधना' (एकांकी संग्रह), 'हमरेच भीतरी सब कुछ हे' (कहानी संग्रह) एक ही वर्ष में तीन तीन किताबों का प्रकाशन महत्व रखता है। तीन अलग – अलग विधाओं में रची गई रचनाओं से यही अर्थ ध्वनित होता है कि इन 21 वर्षोंमें रचनाकार ने खुद को अनेक अनुभवों से सम्पन्न बनाया और उन अनुभवों को रचना में ढ़ालने के लिए ऐसे सांचे की तलाश भी की, जो उन अनुभवों के लिए यथोचित नाप के हों। तलाश के ऐसे ही क्षणों में ही विध ाएं आकार ग्रहण करती हैं और रचनाकार को खुद को प्रकट करने के लिए रास्ता देती है। मेहतर राम साहू की सन् 1999 में प्रकाशित भिन्न – भिन्न विधाओं की पुस्तिका इसका प्रमाण हैं। रचनाकार के लिए अपने अनुभवों

को एक ही विधा में प्रकट कर पाना लगभग कठिन होता है। यदि वह एक ही विधा को पकड़कर चलता है, तो विधा शिखर तक पहुंचने की दूरी को कम अवश्य कर लेता है या शिखर तक पहुंच भी जाता है, किन्तु स्वयं को अपने एक बंधी – बंधायी सीमा से बाहर विस्तार नहीं दे पाता। ऐसे में रचना में प्रवेश करने के लिए आकुल अनुभव अप्रकट ही रह जाते हैं। तब न केवल रचना की हानि होती है, अपितु रचनाकार को भी हानि होती है। मेहतर राम साहू ने आत्मानुभवों के साथ ऐसा नहीं होने दिया । यही कारण है कि उन्होंने अन्यान्य विधाओं का सहारा लिया ।

मेहतर राम साहू के साथ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे लोक से जुड़े रचनाकार हैं। उनके पास ग्राम्य लोक जीवन के ठोस अनुभव हैं। उन्होंने रचना के विषय को पढ़कर या सुनकर ग्रहण नहीं किया है, अपितु उन्होंने स्वयं के अनुभवों से जाना है। इस माने में उनका अनुभव दोयम दर्जे का नहीं है, प्रथम दर्जे का है ग्रामीण जीवन में राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तरों पर जो बदलाव आए हैं, उन्हें उनकी रचनाओं में बखूबी देखा जा सकता है। कविता, कहानी और एकांकी संग्रहों में ग्राम्य जीवन के विविध आयामों को शब्द देने की कोशिश हुई है। यद्यपि 'विष्णु – दर्शन' जैसी पुस्तिका से रचनाकार की रचनात्मकता रेखांकित नहीं होती, तथापि उन पौराणिक कथाओं के छत्तीसगढ़ी लेखन में भाषायी कौशल दृष्टिगत अवश्य होता है। मेहतर राम साहू ने ऐसे – ऐसे छत्तीसगढ़ी शब्दों का इस्तेमाल किया है, जो नेपथ्य में जा चुकें हैं। पवन दीवान जी ने भी किताब की भूमिका में लिखा है – ''विष्णु दर्शन' छत्तीसगढ़ी भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।'

युगानुरूप नवीन उद्भावना के अभाव में हम कथाओं के लेखन को पुनर्रचना की श्रेणी में भी नहीं रख सकते हैं। रचना के क्षणों में मेहतर राम

साहू का 'रामायणाचार्य' का व्यक्ति जब भी सकिय होगा, इसी श्रेणी की रचना सामने आएंगी। यह अलग तरह का लेखन है, जिसे रचनात्मक लेखन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। अतः हमें स्वीकार करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए कि मेहतर राम साहू ऐसे भावुक और सरल ह्रदय रचनाकार हैं जो किसी भी वैचारिक धारा को स्वीकार न करते हुए रचना के किसी भी क्षेत्र में भावुकतावश अथवा अनजाने में अपनी उपस्थिति देते हुए, अपनी रचनात्मकता को सकिय रखते हैं। इसके बावजूद,वे न तो लोकजन को त्यागते हैं और न लोक जीवन को यही बात, उनकी रचना को महत्वपूर्ण बनाती है।

पूर्व में मैंने कहा था कि मेहतर राम साहू मूलरूप से कवि हैं (गीतकार भी) उन्होंने अपनी एकांकियों में अपने गीतों का खूबसूरत प्रयोग किया है। उनमें दर्शकों को 'नाट्य' का सम्पूर्ण रस प्राप्त हो जाता है। यह कतई आवश्यक नही की कोई एकांकीकार भी हो, किन्तु मेहतर राम साहू में दोनों ही गुण मौजूद हैं । वे एकांकीकार भी हैं और गीतकार भी। यह छत्तीसगढ़ी एकांकी– संसार के लिए गौरव की बात है।

'कउंवा लेगे कान ला' और होही अंजोर इन दोनों संग्रहों के बीच न केवल समयगत और शैली गीत अंतर है, अपितु बड़ा अंतर यह है कि प्रथम संग्रह की कविताओं में विचारों की प्रधानता है, जबकि द्वितीय संग्रह की कविताओं में भावना प्रमुखता से उभरकर आई है। मेरा अपना विचार है कि साहू जी ने विचारों को शिद्यत से पकड़ने के लिए अतुकांत सी शैली का इस्तेमाल किया जो छंद बद्धता में संभव नहीं हो सकता था। गीतकार होने के नाते मेहतर राम साहू जानते हैं कि छंद बध्दता और तुकान्तता के चलते कभी–कभी विचारों की जटिलता का शब्दांकन हाथों से फिसलकर रह जाता है और वही विचार प्रधान गीतों में कमजोरी बन जाता है। अतः

अपने विचारों का ठीक–ठीक रूप देने के लिए उन्होंने समकालीन कविता शैली को अपनाया । इसी तरह भावना के आवेश का माधुर्य का साहचर्य गीतबध्दता में बखूबी मिल सकता है और इसके निर्वहन में रचनाकार को किसी असहजता का सामना भी नही करना पड़ता, यदि वह गीतकार है। विचारों और भावना पर बात करते हुए हमें यह नहीं भुलना चाहिए कि मेहतरराम साहू ने विचार प्रधान रचनाओं में भावना को भी स्थान दिया है, किन्तु अल्प मात्रा में उसी तरह उन्होंने भावना प्रधान गीतों में विचार को भी जगह दी है।

'कउंवा' ले गे कान ल' में प्रतीक और बिम्बों का भरपूर प्रयोग करके रचना को रचनात्मक धरातल पर 'पोठ' बनाते हुए मेहतर राम साहू ने छत्तीगढ़ी कविता को नए आयाम दिये हैं और इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि उक्त संग्रह से छत्तीसगढ़ी कविता का संसार सम्पन्न हुआ है। 'कउंवा ले गे कान ला ' यह छत्तीसगढ़ी का एक मुहावरा है जो अपने अर्थ के फैलाव में जीवन में जीवन के हर क्षेत्र में देखा जा सकता है यद्यपि शीर्षकालीन कविता जंगल के पेड़ों के आपसी लड़ाई से शुरू होती है और धीरे–धीरे यह लड़ाई गावों के बीच फैल जाती है। लेकिन किस बात पर लड़ाई किसी को मालूम नहीं है। चूंकि लड़ाई कहीं लड़ी जा रही है। अतः कहीं आपस में लड़ने को जरूर समझ लिया गया तर्कहीन और निरर्थक लड़ाई। आज हर क्षेत्र में यही हो रहा है। लोग कारणों की तलाश करना भूल गए है। पेड़ों का प्रतीक देकर मनुष्य समाज में आज जो कुछ छुट रहा है उसे साहू जी न बखूबी पकड़ा है। अफवाहों से ग्रस्त लोग कारणों की तलाश किए बगैर समाज की शांति के लिए खतरा बनते जा रहे हैं।

कउंआ लेगिस अरे कान ला,

तरमिर– तरमिर धरिन बान ला ।

काश!यथार्थ की जमीन पर खड़े होकर लोग सोचते और अफवाह रूपी कौए के पीछे नहीं जो समाज की ऐसी दुर्गति नही होती, जो आज चौतरफा दिखाई देती है। चाहे व क्षेत्र राजनीति, या चाहे धार्मिक अथवा सामाजिक,आर्थिक । मेहतरराम साहू का कवि बार–बार तर्क और कारणों की तलाश पर बल देता है–''कोन बइरी/अरम पपई में मोखला कांटा बेध दिस/कोन दुश्मन/करेजा ला छेद दिस/जम्मो दूध ह निथरगे/फूल बगिया में/मेहा उही कांटा ला खोजत हौं'' वह कौए के पीछे नहीं भागता, अपने कान को छूकर देखता है।

मेहतर राम साहू अपनी कविताओं में स्वयं का परिचय देते हैं, विशेषकर अपने कर्म की बाबत। उनकी रचनाओं से उनके कृषक होने का भान होता है। यहां तक कि उनका कृषक और उनका कवि एकमेव हो चुके हैं– ''अस मन होंगे संगी, बने रतेंव खेती–खार, हरत रतेंव जिनगी के भार (होही अंजोर)'' वे एक कृषक कवि है। खेतों में जो उनका रचना कर्म है, वह मनुष्य जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, वही उनके साथ काव्य में ढ़लता दिखाई देता है। उनके अनेक गीतों और कविताओं में मिट्टी की सोंधी गंध है। अनेक ऐसी कविताएं हैं। जिन्हें कृषि कर्म से जुड़ा हुआ कवि ही कर सकता है। उदाहरण के तौर पर 'होही अंजोर' के ये गीत ' कइसे करबो' को लिया जा सकता है, जिसमें अनेक प्रकार की घास और अनेक किस्मों के कंद विवरण आता है, किसानी का हानि पहुंचातें हैं इसी प्रकार ' हांसत हे छानी' नामक गीत जिसमें अनेक प्रकार के अन्नों का विवरण है। खेती–किसानी और श्रम के महत्व को लेकर अनेक रचनाएं है। यह कवि अपनी मिट्टी से किस कदर जुड़ा हुआ है, इसी से ज्ञात होता है कि उन्होने अपनी अंतिम इच्छा इसी में व्यक्त की है – '' जे दिन मैं मर

हर जाहूं/मोला कोनो किसिम के/नावाकपड़ा झन ओढ़ाहू/धरती दाई के हरियर दूबी, पान अउ पतई/ मोर लाश ला/ उही म लपेट देहू भाई/....... धरती के मया/मोर जीव ला जुड़ करही/तुमन देख लेहू, चिता ह/हांसत–हांसत बरही/(कउंआ लेगे कान)।

कवि कृषि कर्म विषयक रचनाओं से ही बंधकर नहीं रह गया है। उसने खेती किसानी को शब्द बध्द करते हुए भी खुद अनेक विषयों तक फैलाया है। एक ओर खेती वे प्रेम और श्रृंगार पर रचना करते हैं । जहां वे देश की भावी पीढ़ी को आचरण गत गिरावट को रेखांकित करते हैं तो वही मौसम और प्रकृति की परिवर्तन शीलता पर सम्मोहित होते हैं, कहीं मनुष्य की क्षरणशीलताओं और दार्शनिक भाव भूमि पर शब्द देते हैं। तात्पर्य यह कि कवि मेहतर राम साहू कविता के खेत में भरपूर किसानी करने वाले कविता के सफल कृषक हैं।

मेहतर राम साहू की रचनाएं ग्राम्य जीवन को रूपांकित करती हैं– ''गंवई में/डफड़ा के मान/ मंड़ई मेंला में देखो ओकर शान'' लोक समाज की (विशेषकर ग्राम्य समाज) संस्कृति में जो अमृत तत्व भरा हुआ है, वह भी रचना में स्थान पाता है। लोक की सामूहिक भावना पर साहू जी ने कई स्थानों पर लिखा है। यथा– बांटले संगी/सुख–दुख ह बंटा जाही/कहुं कोन्हो ला/नईपदोन/एक में पानी पीबोन/जिनगानी जीबोन/. ................'' बांट–बांट के चारा चरबो/मरे बर होही ते/एक्के संग मरबो (कउंवा लेगे कान ला)।'' अथवा '' आगी पानी हावय भूंइया, अपन, अपन में हावय एक/सब झन एक में मिलके संगी जिनगी देत हावय अनलेख/एक चोला, एक सुनता राखन/सरग हो जाही गां/'' (होही अंजोर) दुखों पर विजय प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करती है'' ''ददरिया के धुन मा डफड़ा हा गदक जाथे/छोकरा अउ छोकरी/डोकरा अउ डोकरी/दिन देखे न

रात/फदक जाथे/" (कउंवा लेगे कान ला) गांव में मरना–जीना, सुख –दुख सब एक साथ भोगा जाता है।

देश की राजनैतिक हवा विषाक्त है। राजनीति स्वार्थों से भरी हुई। वहां भ्रष्टाचरण को व्यवहार योग्य माना जाता है। इसका प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में पड़ा है। परिणाम यह हुआ कि अब अपना देश पहले वाला देश नहीं रह गया। पहले वाला देश कहीं खो गया है– "धरम उलटगे/उल्ला होगे ईमान/जिहां के माटीबर/बेर बेर तरसे हे भगवान/जुर मिलके/चलो खोजबो संगी/गंवागे हे हिन्दुस्तान/" (कउंवा लेगे कान ला) ऐसे में कवि देश के इतिहास को स्मृति में लाता है और आज के जन में प्रतिनिधियों की तुलना करता है–" अंगरेजवा ले एक गोड़/ओ पार नहकगे/भनखे ह/मनखियत ले बहक गे/गांधी के/नता दिन/" (वही) आज राजनीति के खिलाड़ी स्वार्थों में आंकठ डूबे हुए हैं। उनके आसपास ऐसे लंगु झंगुओं की भीड़ रहती है, जो जन प्रतिनिधियों के कान में लगातार कुछ न कुछ भरते रहते हैं। नेता की बातों का सुनना और उसी पर चलना अपना कर्तव्य समझ बैठें है। यहां 'कउंवा लेगे कान ला' चरितार्थ होता है। नेता की दृष्टि में सामान्य जनता मतदाता है अथवा मूर्ख भीड़। उन्हें जनता की याद चुनाव के दिनों में आती है। चुनाव के बाद जनता का संबंध नेता से टूट जाता है। उनके सारे वायदे हवा में ही रह जाते है – "हमर पांचों अंगरी ला/घी मा डारे बर/पुचकारिन–दुलारिन/काम ह सिधगे/ताहन हमी ल/कुकुर बरोबर दुतकारिन/अब तो ओकर पांव परत हन/जेकर सेती/मरत हन/"(कउंवा लेगे कान ला)" गोठ अइसे करथे के सरग नइ समाही/दिन मा घलो रात के चंदैनी ला देखाहीं/नाप हमर पनही के लेगे ले कटार के (होही अंजोर)। इस काव्यांश की अंतिम पंक्ति विचारनीय है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ी

में जूते बांटने की राजनैतिक प्रथा है। इस संग्रह का प्रकाशन सन् 1999 में हुआ । इसका अर्थ है कि कविता उक्त राजनैतिक पनही से पहले की है। अतः कवि की भविष्य दृष्टि प्रशंसनीय है।

कवि का यह कथन ''अंगरेजवा ले/एक गोड़/ओ पार नहक गे/'' भी हमारे सामने है। यह आजादी के बाद प्रखर सूर्य तो निकला, किन्तु उसकी रौशनी क्या सब में बराबर बटी रही है ? यह अपने वर्तमान से त्रस्त हर मनुष्य का ज्वलंत प्रश्न है। अतः कवि की प्रश्नाकुल है –''काबर/अंजोर हा नई आवय/हमार तिर का हमर सांस ह बस्सावत है ? ''वह आज के काले अंग्रेजों के कारण भारतीय जनता की जो बदतर स्थिति बनी है, उस पर कवि की दृष्टि है –''जिनगी बर/जूझत–जिझत/मांस कोचरागे/लहू हा सेटरागे/अभाव के पथरा तरी/हाथ हा चपकागे/''(कउंवा लेगे कान ला)। यह देश की सामान्य स्थिति है असामान्य स्थिति तब होती है, जब काल घिर आता है। शासकीय तौर पर राहत कार्य खुलते हैं। इसी के साथ मंहगाई भी बढ़ती है। अकाल में मंहगाई का फायदा किसे होता है ? यह भी कवि की दृष्टि में है – ''धनवाला के घर हा भरगे/ये दुकाल के आये ले/गरीब मन के पूंजी झरगे/दुखेच दुख समाये ले/खोर गली मं लइका रोवे, चुलहा मेर महतारी'' (होही अंजोर)

मेहतर राम साहू आशा और विश्वास के कवि हैं किन्तु आसपास की बिगड़ती दशा को देखकर लगता है कि कहीं न कहीं रोज एक सूरज की मृत्यु हो रही है। यह बेहद कष्टप्रद और भयावह स्थिति है ''निराशा के अंधियारी पाख हा अभरगे/अंजोर खातिर एक ठन सुरुज हा मर गे/''(कउंवा लेगे कान ला) पढ़ने ओर सुनने में यह कथन विरोधाभास सा प्रतीत होता हे, किन्तु कटु सत्य यही है। देश का भावी नागरिक, जो देश के भविष्य को अपने प्रकाश से प्रकाशित कर सकता था, वह खुद अभावों के अंधेरे में

घिरकर क्षय को प्राप्त हो रहा है। उसके शैशव में ही बुढ़ापा और मृत्यु है।

विश्व में ऐसा कोई कवि नहीं है, जिसे प्रकृति ने अपने सौन्दर्य से मोहित न किया हो। मेहतर राम साहू तो प्रकृति के बीच पलने वाले कवि हैं। खेत की मेड़ों पर उनकी कविता पग धरती है, गांव की गलियों में घूमती है, जहां प्रकृति का साक्षात्कार करता ? वर्षा और बसंत के अनेक चित्र उनके गीतों और उनकी कविताओं में देखने को मिलता है। वर्षा तो कृषि जगत के सपनों को साकार करने वाली देव कन्या ही होती है। जहां कृषि की बात होगी, वहां वर्षा की चर्चा खुद ब खुद चलने लगती है और जहां वर्षा की चर्चा हो वहां कृषि की बात भी घुस जाती है "गुरमटिया सरना हांसय, कुलके झिल्ली संग सफरी/झूमे डोंगरी अउ परबत, फुदके गोड़रिया बपरी/परकीती रस बरसावै, झूमे बगिया कर परिया/मोर माटी मा तै खेल रे बादर करिया/(होही अंजोर) कवि को बादलों का सौंदर्य आकर्षण पास में बांध लेता है–"बादर बुजा हा/दिखथे करछहूं/कभू–कभू ? तेंदू सीथा कर उज्जर/कहूं–कहूं दिन/कबरा चितरा ? पींवर हरियर/रहिथे सुध्घर फरियर/साध लगथे/एक ठोमहा धर के/अंग भर मा चुपर डारौ/(कउंवा लेगे कान ला) अथवा "कुंवारी बदली/धरती के कुंवारा बेटा/घर आगे/पिरित में/सांस हा सनागे/असाढ़ सावन भादो/तीन संतान पागे/"(वही) अथवा "जेठ के धान ला/लाहो के फल मिलगे/बैरागी बादर के समाधि टूटगे/(वही)बसंत का मौसम तो उत्साह और उमंगों का फाग और रंगों का मौसम है ? दिशाएं रंग बिरंगे फूलों की सुगंध से सुगंधित रहती हैं। पलाश के फूल यौवन के प्रतीक बनकर दहकते से प्रतीक होते हैं, –"राजा बसंत हा/जम्मो तन बगरगे हे/सबरी के मीठ मीठ बोइर/लठर गेहे/ छोकरी अउ छोकरा भांवर किंजर

गे हे/डारा पाना झमाझम झुमर गेहे/"(होही अंजोर)

कवि मेहतर राम साहू का प्रेम राग लीक–लीक चलता हुआ भी कथन के नए सुर ताल में आबद्ध है। प्रेम का स्वरूप तो हमेशा एक सा होता है, किन्तु उस प्रेम को देखने की दृष्टि में अंतर होता है। प्रेम और श्रृंगार मेहतर राम साहू के यहां पूजा के योग्य हैं–"माथा के बिंदिया/जोगनी बने हे/चमकत हावे भरपूर/नथनी, टिकली, माला, मुंदरी,/चूरी, पहुंची ऐंठी ककनी/ जुगुर–जुगुर करत हावय/ जइसे पूजा के कपूर/(कउंवा लेगे कान ला) उनकी प्रेम श्रृंगाराधारित कविताओं में एक विशेषता यह भी है कि उन्होंने नवीन उपमाएं दी हैं। अतः उनमें एक अनछुयी सी ताजगी आ गई है। "कर्राय–कर्राय/पींवर खेक्सी कस/हाथ–गोड़/ पाके कुंदरू कस/ चिक्कन नाक/पतरेंगवा/असन देंह/"अथवा–"तोर आंखी/सदा सोहागी/चिरइया फूल कस तोर ओंठ/ गड़ा शक्कर असन तोर गोठ/ दुबराज के गुरतुर बासी/ तोर हांसी" (कउंवा लेगे कान ला) अथवा"चिरइ जाम आंखी/अउ खोखमा हे मुस्कान/लगथे तोर चेहरा/मोर ले लेही जान/" "उवे हे इन्दर धनुस माहुर तोर हाथ में/चांदी सही चमकत हे, खीरा बीजा दांत में ए (होही अंजोर)

जब उम्र पकती है तो अनुभव सघन हो जाते हैं। ऐसे में कवि एक नयी दृष्टि से सम्पन्न हो जाता है और वह दृष्टि होती है–दार्शनिकता की। वह लगातार जीव और जगत पर भी चिंतन करता है और उस पर अपनी टिप्पणी देता है "ला कहिथों/कुम्हार कांचा माटी अस सनाय हे/ ठोंक ठठाय के/ चिकनाय हे/ गढ़े बनाय हे/ सुख दुख लकड़ी के/ आंवा भर पाके हावय/अथवा तनः अण्डी के जर/गरेर आइस/उखनगे/मनःजइसे बोइस कांटा झरगे।" (कउंवा लेगे कान ला)

कवि मेहतर राम साहू श्रमजीवी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उनके स्वर में आशा और विश्वास झलकता है। वे चिमनी के धुएं को भी पीकर जी जाने की बात करते हैं। आज का श्रमजीवी समाज यही तो कर रहा है। वह कुएं को पी रहा है और जी भी रहा है। जिजीविषा का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है।

अब कुछ बातें मेहतर राम साहू की काव्य भाषा पर। उनकी भाषा में जो चमक है, वह भाषा की सादगी की चमक है। उनकी भाषा में नदी का सा प्रवाह है। जहां–जहां उन्होंने रूपक गढे हैं और नई–नई उपमाएं दी हैं–भाव और विचार और अधिक गहरे हुए हैं तथा दूर तक फैले हैं काव्य भाषा में उन्होंने नए पुराने मुहावरों का प्रयोग करके उसे जीवंत बनाया है। उनकी रचनाओं में ऐसे ऐसे बिम्ब मिलते हैं, जिन्हें देखाते बनता है। आंखों के सामने चित्र जीवंत हो उठता है – "मेघवा दानी मुंहू तोप के, सोगे भइया चुरू–मुरू।

और अंत में, मेहतर राम साहू छत्तीसगढ़ी के उन कवियों में से थे जिनकी कविता पर गर्व किया जा सकता है, विशेषकर प्रथम संग्रह कउंवा लेगे कान ला।

# भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण कृति विष्णु दर्शन

पवन दीवान

विष्णु दर्शन का लेखन एक मौलिक प्रयास है, क्योंकि छत्तीसगढ़ भाषा में धार्मिक और अध्यात्मिक लेखन बहुत कम हुआ है, जबकि अधिक से अधिक श्रेष्ठ साहित्यकारों की श्रेष्ठ रचनाओं का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद कार्य होना चाहिए। इससे छत्तीसगढ़ी भाषियों में लेखन और पठन दोनों की प्रवृत्ति पनप सकती है।

कविवर मेहतरराम जी साहू विगत 48 वर्षों से छत्तीसगढ़ी भाषा में लिख रहे है। उनकी प्रकाशित एवं अप्रकाशित कृतियों की संख्या देखकर उनके समर्पण की जानकारी मिलती है, वे एक छत्तीसगढ़ी के रस सिद्ध कवि हैं। विगत 50 वर्षों में छत्तीसगढ़ी को अनाधिकृत व्यक्तियों द्वारा अर्थ संग्रह की दृष्टि से बड़े पैमाने पर विकृत किया गया है। उसे पुनः मौलिक रूप देने में श्री साहू जी जैसे साधक का योगदान मूल्यवान है। इन्होंने अनेक लुप्त होते हुए शब्दों का प्रयास किया है जो इनके साहित्य में सर्वत्र उपलब्ध है।

"विष्णु दर्शन" छत्तीसगढ़ी भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ी साहित्य के भण्डार को अधिकाधिक भरने की जरूरत है।

इस कड़ी में श्री मेहतरराम साहू द्वारा छत्तीसगढ़ भाषा में रचित श्री विष्णु दर्शन एक उपलब्धि है।

मेरा अनुरोध है, छत्तीसगढ़ के भाई–बहन इसे पढ़ें और छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य के भविष्य की रूप रेखा पर गंभीरता से विचार करें।

# मेहत्तर राम साहू को याद करते हुए

रवि श्रीवास्तव

मेहत्तर राम साहू दिसम्बर 2010 में हम सबको अलविदा कह गए। परम्परानुसार किसी-किसी अखबार में समाचार आया। आत्मीय जनों ने शुभचिंतकों तक उसकी मृत्यु की खबर पहुंचाई। जिसे जब सूचना मिली, दुखी हुआ. चुपचाप लिखने पढ़ने वाले चुपचाप ही चले जाते हैं। नयी पीढ़ी जिन्होंने अभी हाल में लिखना शुरू किया है, वे शायद इस नाम से परिचित न हों। मैंने कतिपय युवा लेखकों से पूछा तो उन्होंने अनभिज्ञता जाहिर की। यह स्वाभाविक है। साहू जी ने खूब लिखा। अच्छा लिखा। विभिन्न विधाओं में लिखा। उनकी ख्याति छत्तीसगढ कवि के रूप में थी। कउंवा ले गे कान ला उनका पहला और महत्वपूर्ण काव्य संग्रह था। संभवतः चार दशक पूर्व का। जिन्होंने यह संग्रह पढ़ा उन्हें नहीं भूल सकते। उन दिनों छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह अपने बल बूते निकाल लेना असंभव कार्य था। जिसे साहू जी ने संभव कर दिखाया। बाद में विभिन्न विधाओं में उनके संग्रह आए। वे चुप बैठने वाले कवि नहीं थे। अध्यापकीय जीवन के साथ साहित्य सेवा का जुड़ाव आखिरी सांस तक बना रहा। ऐसा साहित्यकार जब चला जाता है तो साहित्य के वृक्ष का पत्ता तक नहीं खड़कता। जनपदीय भाषा की यह भी विडम्बना है। आज के कठिन समय में अपने पैरों तले की जमीन बचाना मुश्किल चुनौती है। अपनी जमानत बचाए रखते हुए कविताओं को बचाकर रखा जा सकता है।

साहू जी ने कविताओं के अलावा कहानियां लिखीं। नाटक लिखे। पौराणिक पात्रों के चरित्र को विषय बनाया। वे एकांत साधक रहे। अच्छा लिखकर भी चर्चाओं के केन्द्र में नहीं आए। जिस तरह एकाध कमजोर कविताओं के संग्रह के बल पर कवि अपना डंका बजा लेते हैं। मंच पर

सम्मानित हो लेते हैं । रेवड़ी की तरह शाल और श्रीफल को महतारी के ऋण से उऋण होने का सुख भी प्राप्त कर लेते हैं। साहू जी करते हुए खल पात्रों का स्मरण आना स्वाभाविक है। साहू जी ने उस समय लिखना शुरू किया, जब छत्तीसगढ़ी में लिखने वाले गिने चुने होते थे । उन्हें अपना भविष्य हिन्दी में ज्यादा सुरक्षित जान पड़ता था। यह भी विडम्बना है कि छत्तीसगढी लिखने वालों ने भी उसे बिसार दिया। एक जुट होकर श्रध्दांजलि भी नहीं दे पाए । अभी हाल फरवरी 2011 में दुर्ग निवासी छत्तीसगढ़ी भाषा के लोकप्रिय कवि चतुर्भुज देवांगन नहीं रहे। उनकी कविता छत्तीसगढ़ शासन के स्कूली शिक्षा के कार्यक्रम में शामिल रही। उनकी मृत्यु की जानकारी राजधानी रायपुर तक नहीं पहुंच पाई।

मेहतर राम साहू को नारायण लाल जी परमार का आत्मीय सानिध्य मिला । परमार जी के लम्बे बागबाहरा प्रवास के दौरान यह संभव हो सकता । साहू जी परमार जी को अपना गुरू मानते रहे। उन्हें बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला, लेखनी में निखार आया। गोष्ठियों में आने–जाने का सिलसिला बना रहा। परमार जी के अस्वस्थता के दिनों में धमतरी जाकर अपने गुरू का कुशलक्षेम लेते रहे। उन्हें देखने गांव तक ले आई । परमार जी जंहा भी रहे, अपने शिष्य तुल्य साहित्यकारों को मुक्तहस्त से कुछ न कुछ देते रहें। देने की यह परम्परा दुर्लभ है। सबके लिए आसानी से सुलभ नहीं। यह परमार जी के स्वभाव में समाहित था। परमार जी राजिम से पच्चीस किलोमीटर दूर पांडुका में भी रहे। बहुत बड़ा कस्बा । वहां के स्थानीय साहित्यकार चैतराम व्यास व उधोराम झखमार निकट आए। कस्बे की आत्मीयता जल्दी घुल मिल जाती है। दोनों कवियों में जन्मजात लेखन क्षमता थी।

आजादी नयी नयी थी। उसकी उम्र मुश्किल से सात--आठ वर्ष

परमार जी ने सानिध्य से उन दोनों को लेखनी की प्रेरणा मिली। दिशा मिली। वह समय कस्बाई जीवन में साहित्य का सूर्योदय था। चैतराम व्यास की प्रतिभा सम्पन्न गायक थे। बाद में ग्राम सहायक के पद पर नौकरी मिली । वे भोपाल आकाशवाणी के चौपाल कार्यकम में भाग लेकर आ चुके थे। जब रायपुर आकाशवाणी ने अपना प्रसारण भी शुरू नहीं किया था। उधोराम झखमार पेशे से टेलरिंग कार्य से जुड़े रहे। जीवन के अंत में वही अजीविका का साधन रहा। बाद के वर्षों में वे छत्तीसगढ़ के दुलारे कवि सिध्द हुए। मंचपर उन्होंने श्रोताओं का भरपूर स्नेह प्राप्त किया। उनकी कविताओं में शिष्ट हास्य और व्यंग्य का पुट बना रहता था। सुशील यदु के अथक प्रयास से छत्तीसगढ़ी साहित्य सम्मेलन द्वारा उधोराम झखमार का एक काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। धमतरी में यही प्यार, स्नेह और मार्गदर्शन भगवती सेन को मिला। काव्य मंचों पर भी भगवती सेन ने परमार जी के साथ अनेक अविस्मरणीय यात्राएं कीं। युवा कवि डुमन लाल जी ने भी निकट सम्पर्क में रहकर सीखा और आत्मसात किया। जिसका उपयोग डुमनलाल ध्रुव लगातार करते आ रहा है। गुरू के प्रति इससे बड़ी निष्ठा और सम्मान क्या हो सकता है। धमतरी के तमाम वरिष्ठ साहित्यकारों को इस बात के लिए बधाई कि उन सबके प्रयास से मुजगहन (धमतरी) में एक भवन तैयार चुका है। जो भविष्य में नगर की साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र बनेगा। इतना ही नही डुमनलाल के प्रयास व धमतरी के साहित्यिक बिरादरी के सहयोग साहित्यकारों को सम्मानित करने का सिलसिला प्रारंभ हुआ है। नारायणलाल परमार, मुकीम भारती, भगवती सेन व बसंत दीवान के नाम से प्रतिवर्ष से छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों को सम्मानित करने का कम पिछले कुछ वर्षो से चल रहा है। मेरी जानकरी के अनुसार दिवंगत साहित्यकारों के नाम से इकट्ठे इतने पुरुस्कार

छत्तीसगढ़ की किसी अन्य संस्था द्वारा शायद ही दिये जाते हों।

मेहतर राम साहू को याद करते हुए इन गतिविधियों का स्मरण हो आना स्वाभाविक है। आज भी धमतरी के वरिष्ठ साहित्यकार त्रिभुवन पाण्डेय व सुरजीत नवदीप युवा साहित्यकारों के प्रेरणा स्त्रोत बने हुए हैं। रंजीत भट्टाचार्य के संपादकीय कौशल ने भी छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों को बाधें रखा है।

# तिरिया जनम महा दुखदाई

डॉ. बलदेव साव

रतना बपरी श्री मेहतर राम साहू के कविता के तीसर किताब आय, उन सन् 1954 ले सरलग लिखत आत हे, एबात ल धियान म रख के ए किताब के पहिली उंकर काव्य – व्यक्तितव उप्पर संक्षेप म परकास डालना को जाने काबर मोला जरूरी लागत हे।

भासा साहित्य के इतिहास म छत्तीसगढ़ी मासिक (1955–56) के परकासन हर एक ठन क्रांतिकारी घटना आय एकर ले हमर दिसा अउ दसा दूनों के परिचय मिलथे। ए वो समय आय जे मा छत्तीसगढ़ी राज निर्माण के सपना ल अकार देहे के सचेत कोसिस होथे,कोनो आन्दोलन ल चलाये बर क्षेत्रीय भासा के अहम – भूमिका होथे, जनता तक संदेस लाए ले जाए बर क्षेत्रीय भासा ही हर सजोर होथे, कामगर होथे छत्तीसगढ़ी मासिक ले नवा पीढ़ी ल नवा ढंग ले सोचे – समझे के मंच मिलथे, जन – जागरन के अलावा बिधा अउ सैली के दृष्टि ले भी भासा – साहित्य के बिस्तार होथे, कविता, कहानी, प्रहसन, नाटक, निबंध सब्बेच बिधा म ए समय कलम चले लगथे। ए पतरीका ले दूसर पीढ़ी के बिप्र जी अउ दलित जी जइसन जन कवि मन तो जुड़ेच रहीन तीसर अर्थात नवा पीढ़ी के श्यामलाल चतुर्वेदी, नारायणलाल परमार, हरि ठाकुर, केयूर भूषण, ध्रुवलाल वर्मा, पालेश्वर शर्मा, शिवशंकर शुक्ल, मेहतर साहू अउ चैतराम व्यास जइसन प्रतिभावान कलमकार मन जुरे रहिन। परमार जी कथे – ए पतरीका म सबले जादा, अउ सब्बेच बिसे म लिखइय्या कवि – लेखक मेहतर साहू रहिन। पतरिका साल भर चलिस परकासन के अभाव म कई होनहार रचनाकार मन मुरझुरा गइन, फेर साहू जी के जरी गहिल म गड़े रहीस जेहर जाड़ – घाम सहिके भी पथरा ले रस खींचे के ताकत रखथे।

एकरे कारन सुरू ले साहू जी के थोर -- मोर चर्चा ओगरात है। छत्तीसगढ़ी मासिक म साहू जी के "पानी असाढ़िया परगे" जइसन लोक जीवन के उमंग अउ उमंग मोर जग अंधियार जइसन सोसित जन के पीरा अउ आकोस के कविता छपय उंकर राजा बेटा प्रहसन के तो आजो ले सुरता किये जाथे।

साहित्य के क्षेत्र म साहू जी सरबस दानी आयं। अब तक उंकर सात किताब छप चुके हे जेकर मोल तोल नइये, हबय भी त नहीं बरोबर ए किताब मन के भूमिका छत्तीसगढ़ी के नामी -- गिरामी कवि - लेखक मन ए प्रकार ले लिखे हवय --

1. करेंवा लेगे कान ला (काव्य 1978) नारायण लाल परमार
2. हो ही अंजोर (काव्य 1999) हरि ठाकुर
3. गरा के बंधना (एकांकी 1999) त्रिभुवन पाण्डेय
4. हमरेच भीतरी सब कुछ हे (कहानी 1999) श्री ददरा एवं नन्दन भारती
5. बूडे म मोती मिलथे (कथा 2000) कृष्णारंजन
6. गम्मत, सब परे हे चक्कर म (प्रहसन 2000) विनय कुमार पाठक
7. विष्णु दर्शन (कथानुवाद) पवन दीवान

उप्पर के तालिका ले साहू जी के दीर्घ साहित्य साधना, निविधता अउ लगन के पता तो मिलबेच करथे संगे -- संग उंकर साहित्यिक बिरादरी घलोक के परिचय मिलथे। साहू जी लोक कलाकार आय, लोक साहित्य के संकलन बर उंकर बचपन ले रुझान रहिस फेर साहू जी मूलतः कवि आय, उन न केवल ग्राम्य संस्कृति के चितेरा आय बल्कि सामाजिक -- राजनितिक पाखंड के उप्पर प्रहार करने वाला कवि घलोक आय।

करउंवा लेगे कान ला काव्य संकलन म साहू जी ...

[illegible] मन के सुभिमान अउ विद्रोह हर बोलथे।

ककरो तन पौरी ला / चाटे के आदत नइये

अतस के छेना मा / आगी गुंगावत हावय

कवि के हिसाब म हिन्दुस्तान गंवा गे हे, वोकर पहिचान खो गय हे। भलमनसाहत बिस्सार हो गय हे। पुलिसिया करिया करतुत अंग्रेजन ले नहक गय हे। छत्तीसगढ़िया बर बुधिया हो गय हे। बाहिर के आदमी के चाल म समझके खुदे लड़ भिड़ जात हे –

कउँवा लेगिस अरे कान ला

तरभिर तरभिर धरिन बान ला

एक दूसर ला करिन निशाना

अइसन खातिर का पछताना

हमर भीतरी फूट के कारन छत्तीसगढ़ म बिखहर सांप मन के राज हे। एकर उछेद बर कवि मेर अचूक उपाय हे –

अइसे करो कि / ओखर बर

एक हंडिया मही / अउ एक टीपा

टबकत तेल खोजव / तहां ले बस

नवा रूकम के कथ्य अउ शिल्प के कारन ए संकलन के एक समे बड़ चर्चा होय रहिस परमार स्कूल के कवि – लेखन मन के एही हर असली तेवर आय।

साहू जी के दुसर काव्य संग्रह "होही अंजोर" छत्तीसगढ़ राज्य मिले के दू चार महिना पहली छपे रहिस जेमा माटी के गीता हे, देस भक्ति के गीत हे। उन भुईयां के पुजारी किसान किसानिन के भगत आय। सबो तीरिथ – बरत के दरसन उनला एहीच माटी म हो जाथे माटी के महिमा उंकरेच मुंह ले सुनव –

नागर जोतत राम लखन हा

होगे हे बनवासी

सीता आवत लेके घर ले

चटनी रोटी बासी

चटनी बासी म संतोस करइय्या छत्तीसगढ़ी मन के पतन के असली कारन, आपसी झगरा – लड़ाई, फूट अउ चारी चुगली हर आय। छत्तीसगढ़ राज के बाद के अंदाज तो साहू जी पहिलीच लगा डारे हे

मरगे बिसवास अउ पदागे भरोसा सपना
बड़का बिलडिंग मन लिल डारिन खदर - खपरा
होही अंजोर, अल्ला राम जाने

ए मतरय न्याय हर तो पहिलीच चले आत रहिस [illegible] हद्द हो गय ! बुद्धि जीवी मन के ए हाल हो [illegible]

मनखे आज टेठका बन मूड़ी हलावत हे
छू - छू के तेल अपन तन बदन लगावत हे

साहू जी ए बात के अन्याय, सोसन चापलूसी के बिरुद्ध अउ उन ढील – ढील मनखे ल फटाकरे बिना नइ छोड़य –

कतके दिन ले फंदाय रहिहौ ढांगा में
मनखे हौ जानौं, नइ लगाय जाहै
हो ही अंजोर अल्ला राम जाने

साहू जी के गद्य साहित्य म भी एही बात के आक्रोस [illegible] – गंवई म फैले कुरीति के बिरोध म भी कलम चलाथे अउ [illegible] ले छत्तीसगढ़िया मन ला सिक्षित करे के, उंकर संसकार [illegible] उदीम करथे, वोइसे आन कर्म घलोक ले सिक्षक आयं। [illegible] मास्टर जो हर आंखी मूंदत ले अपन बाग [illegible] छोड़य।

अपन जीवन के उत्तरायेन म मेहतर साहू तुलसी साहित्य म बूड़े रहिन अउ तुलसी के दूसर अनछुवा हिस्सा ल रतना बपुरी सीरसक ले छुए के कोसिस करे हे, इहां साहू जी के सहृदयता अउ भावुकता उंकरेच जगा हवै।

रतना बपरी म एक दूबर – पातर कथा सुरू ले अखीरी तक लामे हे, एकर अधार ए दूठन दोहा मन परसिद्ध आयं –

लाज न लागत आपको दौरत आयहु साथ
धिक धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ
अस्थि चर्म मय देह मम तामे ऐसी प्रीति
तैसो जो श्री राम महँ होत न तौ भव भीति

रतनावली के कथा के जिक्र गोकुलदास के दो सौ बावन बैष्णवन के वार्ता, प्रियादास के भक्तिमाल की टीका, रघुवर दास के तुलसी चरित अउ बेनी माधव दास के गोसाईं चरित्र म होय हे। तुलसी के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण घटना के संकेत तो कवितावली अउ विनयपत्रिका म भी मिलथे फेर रतनावली के बिषे म एकर सिवाय अउ कछु उल्लेख नइ मिलें। मेहतर साहू जन कथा म जादा बिसवास करथे। सुन्ना घर ले बिना तुलसीदास के पूछे रतना अपन भैया के संग मयके आ जाथे। घर ल सुन्ना पाके तुलसीदास ब्याकुल हो पिछलग्गो ससुरार पहूँच जाथे। चिर – वियोगिन रतना ए बात के सुरता कर करके कलपे लगथे –

नदिया नाहकिन मुरदा धर के
घर म चढ़गे सांप अमर के,
खिड़की डहर ले कूद के आगे
देख के ओला मन भकुवा गे।

रिस म करू कहि पारेव ओला
मन म मारत हे हिचकोला,
निकल गेय तैं तुरते घर ले
बोली बचन लगिस चरचर ले।

रतना के करू गोठ तुलसी ल बम के गोला लगथे उंकर सूते संसकार जाग जाथे, उंकर हिरदे म राम कथा के कोई अंकुर फूट परथे। उन एक मुरखे घर ले निकल के बैराग धारन कर लेथे, साधू संत के संगवारी बनथे, उन राम नाम के अलख अग – जग म जगाए लगथें, उंकर जस चारों मुडा फैले लगथे, उंकर भक्ति के आगी प्रज्वलित हो उठथे, एती रतना बपुरी के फुलवारी उजर जाथे। सुख के सागर सुक्खा हो जाथे, वो पीरा के अगम दहरा म बूडे लगथे। ए पीरा म बिरह बेदना ले जादा पछतावा के आंसू हे । कतका तीज तिहार, मन भावन सावन रंग बसना आथे, अउ लहुट जाथे फेर रतना के तुलसी लहुट के घर नइ आवैं। एक डांड़ चिट्ठी तक नइ लिखै, अब तो रतना के हाल रानी नागमती कस हो जाथे, वोकर दुख म चिरई चुरगुन तक घर – गांव रूख राई बाग – बगीचा ल सुन्ना करके उड़िया जाथे। हे खग हे मृग मधुकर श्रेणी....... जइसन खोझ अउ भटकाव सुठ हो जाथे, बिरही यक्ष जइसन जड़ – चेतन म वो फरक नइ कर पावे सरि – दुनिया खोझ – खाइन के रतना हतास -- निरसा अस्सख घर लहुट जाथे संगी जंवरिहा वोला धिन करे लगथे, कुलक्ष्मी समझ अलग छोड़ देथे, रतना पति के रहत ले अनाथ हो जाथे, वोला जग के धुंगिया पिये बर परथे। रहि रहि के सुरता आथे, बिहाव के मंड़वा, भांवर एक दूसर म समाय के सुख, हंस हंस बिहान होवईय्या सुहागरात.... चिरई जाम कस आंखी सुलुंग सांटी देह। भांवर के धोती कुरता आज भी ओला झटका देवत हे। एक जोड़ी पलक उठथे त रतना के हिरदे म अंजोर समाजाथे अउ गिरे ले चारों मुंड़ा अंधियार छा जाथे। ओही अंधियार म धोती पहिरे मुसकी ढारत, टकटकी लगाके देखत तुलसी के

मूरत झूल – झूल जाथे। कथा बांच के तुलसी परसाद लेके लहुटत हे ओती गहना म सजे धजे रतना आंगन म हिरना कस फुदकत हे, तुलसी कछु न कछु बहाना कर के बार बार घर लहुट आथे, रतना के रूप रस म अइसन माते के पसिया टटिया म मोढ़ेच के माढ़े रहि जाथे। वो ही तुलसी आज रतना के जीवन ले दुरिहा होगे। वो वोकर अगोरा म अपन तन ल तुनत हे, सुआगत म घर लिपत हे चौंक पुरत हे। रतना ल तुलसी के खाए पीए रहे बसे के संसो, ओढे दसाय के संसो, अकेसा म घर म बड़ बड़ात हे –

हे गंगा के गहुंरी जल
तैं बूडबे झन रहि जाबे संभल
जबरन के हाथ झिकैय्या हे
कोतवाल अउ वोकर सिपैहा हे

नगरी सुलभ दुरबलता घलो हे रतना म – तोला घर ले ही ब्रह्मचारी/ अइसन दुस्टिन हबय नारी हाल – बेहाल रतना तुलसी के सुरता कर करके रकम रकम के बिलाप करत हे, लोग एला ढोंग ढेकचाल समझत हे। रतना के बिलाप ले ए काव्य के छंद छंद गुंजत हे वोकर दुख वोकर कथा अगम हे अपार हे –

पपनी में हौं जनमत बांझ
रोतव बिहनिया पुरगे सांझ
रात पहाथौं चंदैनी गिन गिन
दिन हर लागथे सांपिन सांपिन

एचेक बड़ बिपत अउ दुख म भी रतना तुलसी के प्रीत रोस नइ करै, एला अपन करम डंड समझथे आंखी ले बादर बरसत हे तभो प्रभु ले प्रार्थना करत हे –

भगवान रखे तोर चोला अमर
तोला लग जाए मोर उम्मर

अमर बेल म भंसकटैया के कांटा उठगे, हिरदे म स्वामी के मूरत बसाए वोकर पगड़ी ल धरे तरना स्वामी – स्वामी कहत प्राण छोड़ देथे, एती कवि के करूणा व्यंग के नस्तर लिए मूर्तिमान हो उठथे –

रामायण रच तैं सब पाये
तोर रतना लहुट के नइ आये,
हे स्वामी रटत रटत मरगे
तैं जान कि रतना हर तरगे।

कथा के सूत्र तो बित्तेच भर के रहिस फेर कवि अपन प्रतिभा ज्ञान उर्वर कल्पना के महीन धागा ले अइसन जाल बुने म समर्थ हो जाथे के जेवो मा फंसगे, ते बहुत जल्दी बाहिर नई निकल पावैं, रतना बिलाप हर लोक जीवन, खास करके छत्तीसगढ़ी लोक जीवन म संभव आय, एहर मात्र कल्पना नोहय। वोइसे तो रतना के बिलाप हर सुरू ले अंत तक लामे हे, फेर जे जे मेर कण्ठ अउ दृष्टि रोध होय हे कवि हा ओमेर संभार डारे हे, वोकर करूणा बरनन कर के दृश्य – बिम्ब मन ल खंडित होय ले बचा डारे हे।

ए काव्य म सबे दृश्य हर पूर्व दीप्ति (फ्लेश – बैक) म ही संभव होथे। एमा कथा के कोई क्रमबद्ध योजना नइए, कहे जाय के प्रबंध काव्य के अपेक्षित नाट्य संधि, अवस्था या कार्य के बिन्यास नइए। 8 – 8 मात्रा के दोकल के 16 – 16 मात्रा के चार चरण ले छंद पूरा होथे। कहूं कहूं 15 – 15 मात्रा भी हे एला चौपाई के अन्तर्गत रखे जा सकत हे कवि छंद म रहिके भी स्वच्छंद हे। ए हर सर्ग बिहीन काव्य आय नैरेटिव पोइट्री या कहानी के कसावट (संकलन त्रय) के भी दूहां नामो निसान नइये, ए दृष्टि

ले एला खंड काव्य नइ कहे जाय, एहर बिसुद्ध रूप ले गीति काव्य आय ठीक मेघदूत या आंसू जइसन अप्रचलित सब्द अउ मुहावरा ले एकर काव्य भासा हर बड़ सरस हो उठे हे, छत्तीसगढ़ के लोक जीवन हर इहाँ साकार हो उठे हे। तोइसे भी अवधी अउ छत्तीसगढ़ी के सीमा लगे हुए हे।

मेहतर साहू रामायणाचार्य आय, तुलसी के अनन्य भक्त आय, वोकरे कारण उकर स्वर हर तुलसी के पास एक फरियाद के स्वर बनके जाथे – बीस बच्छर ले भी राम राम जपते तब्भो रामायण नइ लिख पाते अउ न तुलसी दास कहलाते जइसे बात म एम मरम, ए पीरा छिपे हुए हे, उन कथें रतना तो तोर भाग जगा दीस, संत जी तैं कइसे निर्दयी निकलगे ?

मन ला कइसे के मार डारे –

तैं राम ले अहिला ला तारे
पखना रतना ला कर डारे
शुकखा कठहार दनकार परे
हरिन अजान हो फुदक मरे
तैं हा केवट के कथा गढ़े
सब जानत हे बिन लिखे पढ़े
परिवार संग अपनो तरगे
का रतना बर ठोठा परगे।

जो तुलसी हर रामचरित मानस लिखे के अखिल जगत के कल्यान कर दीस, दुर भाग्य के बात आय उंकर कहूं मेर कोइ प्रमानिक इतिहास, जीवन – चरित नइ मिलै, एकर ले अउ जादा दुरभाग्य के बात

तो ये आय के उंकर प्रेरना स्त्रोत, उंकर प्रान – प्रिया रतना जेकर अपरूप छबि प्रेम अउ ज्ञान के प्रकास ह तुलसी साहित्य जगा जगा प्रति भासित हवय, तेकर बर कोनो संत महात्मा, कवि -- लेखक मन संतुल रूप ले एकोठन चरित काव्य नइ लिखिस। फेर हमर समय के क्रांतिदृस्टा कवि निराला हर पहली बार अपन खंड काव्य तुलसी दास (1938) म रतना के उदात्त चरित के अइसन मूर्ति – बिधान करिस हे के ओहर तुलसी के चरित्र ले कहूं मेर उन्नीस नइये प्रेम सक्ति अउ गियान के तिरवेनी रत्नावली के एही छवि तुलसी के हिरदे म समाय रहिस, उंकर ए धिक बचन हर चोखी बान कस लागिस –

धिक! आए तुम यों अनाहूत
धो दिया श्रेष्ठ कुल - धर्मधूत
राम के नहीं काम के सूत कहलाए।
हो बिके जहां तुम बिनादाम
वह नहीं और हाड़ चाम
कैसी शिक्षा कैसे विराम पर आए।

एकर ले तुलसी के काम – वासना छार छार हो जाथे वो रतना के ये ही सारदा रूप ल हिरदे म धारन करे मंद चरन घर ले बाहिर निकल जाथे। ए खंडकाव्य में दू चार साल बाद डा. रामकुमार वर्मा भी संत तुलसी दास नामक नाट्य लिखिन जेकर दूसर अंक म रतना ल अपूर्व सुन्दरी, जोतसी, कवियित्री अउ वाक्पटु बताय गय हे ए अंक म उंकर दाम्पत्य जीवन के सुखमय झांकी देखाय गय हे, फेर तुलसी के गृह त्याग के बाद ओहू रतना के सुध नइ ले पाए हें। ये ही बात डां. राधेय राघव के उपन्यास रत्ना की बात म मिलथे। कुछ जादा विस्तार ले पहली बार अमृत लाल नागर के मानस के हंस म रतना के जीवन के बिसे म पता चलथे इहां रतना अपूर्व सुन्दरी अउ बिदुसी आय भारद्वाज गोत्रीय उच्चकोटि ब्राह्मण के बेटी आय। बिहा के बाद उंकर एक पुत्र भी होय रहीस, जेकर अकाल मृत्यु हो

गय रहीस। इहां रतना के भेंट तुलसी ले तीन बार कराए गय हे जेहर अनहोनी नोहय, पहिली बार चित्रकुट म दूसर बार लोलार्क के बैष्णव मठ म इहां तुलसी ले रतना एतका बचन जरूर ले लेथें, के अंत समय उन दर्शन देवैं तीसर पइत तुलसी अपन बचन निभाय बर अपन गांव – घर आथे, अंतिम समय दर्शन देथें अउ अंतिम संस्कार भी करथे। हमर छत्तीसगढ़ी भासा दानेश्वर शर्मा जी तुलसी के कहिनी  नामक कविता म भी रतना के करूण कथा ल दस – बीस डांड म लिखे हे, फेर बाद म कउनो रतना के सुरता नइ करैं। मेहतर राम साहू ए कवि – लेखन मन ले भिने रूप म रतनावली  के चरित्र ल सामने रखथे। उंकर पूरा काव्य हर रतना उप्पर केन्द्रित हे, एमा प्रकारान्तर से तुलसी घलोक के जीवन पर परकास पड़थे, फेर मुख्य पात्र रतना हर ही आय । बपरी बिसेसन म बहुत कुछ अर्थ ध्वनित होथे, सब उहर ले हतास, निरास, निस्सहाय भाग के मारे ल बपरा या बपरी कहे जाथे।

जहां तक मोला मालूम हे रतना वली बर एतका बिस्तार ले कहूं कोनों कषम नइ चलाय हे, उंकर बर उहर पहली पुस्तक सुतंत्र काव्य आय । छत्तीसगढ़ी म अइसन किताब के कमी हे, उदात्तचरित्र के अंकन ले भासा घलोक पोट्ठ होथे। साहू एक किताब ल लिख के जेतका पुन्य कमाइन हे, वोकर गुनगान करे बर मोर कृतज्ञ – हिरदे के पास सब्द नइए बिसवारा हे आप सुधी जन घलोक मन के मानस म ए रचना बड़ ऊंचा आसन मिल ही ।

# रतना बपरी ऊपर एक नजर

डॉ. प्रभंजन शास्त्री

छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ कवि श्री मेहत्तर राम साहू के छत्तीसगढ़िया मन ला चिन्हारी करवाना एक तरह से ढोसरा मारे या कुडकाये सही लागही के देखन तों मेहत्तर राम जी ला नइ जाने।

जिहां न पहुंचे रवि तिहां पहुंचे कवि ये कहावत के मैं ए अरथ लगाथंव के सुरूज के करोड़ों किरन कस उपके मनखे मन के बुद्धि ह जेला नइ देखाये तेला कवि के कवित्व दृष्टि ह देखाथे। ककरो बने खराब चरित्र जीवन रहस्य जिन्दगी के घटना आदि ल डहर ककरो नजर नइ परे तेला कवि ह देखाथे। मेहत्तर राम जी ह घलो दासजी डरह ले परेटही परे – डरे रतना ला ओकर खिरत फेर बगबग ले उज्जर जिन्दगी ला, ओकर मनन आत्मा के भाव अउ अपन गोसवामी जी के प्रति ओकर प्रेम आदर भाव ले उंचाई ला देखाके हमर सबो के आंखी म रतना के बपरी रूप देखाके ओकर प्रति आदर पूज्य भाव जे ओहा रहिस तेला देखाय हे।

दू झन के झगरा म देखैया के नियाव – तराजू के कांटा ह कमजोर डहर झुकथे। वैसे घला मा – बाप के झगरा मा बेटा ह महतारी के पछतारी तीरथे। रतना डहर साहू जी के सरोटा तिरइ ऐसने लागथे। मोला ऐसे लागथे के तुलसी दास जी ह इही पायके लवकुस कांड नइ लिखिस। ते बखत सीता मैय्या के निवसिन बेरा मा तुलसी के कमल ह सीता जी डहर होतिस, तब राम भक्त तुलसी के कलम ह अपन इष्ट देव त्वमेव माता च पिता कहवैय्या ह आलोचना कर डारतिस।

कवि साहू जी ह खुल्लम खुल्ला रतना के पछतारी तीरे हे। बपरी तो हमन के अंधरौटी छाय आंखी ल उघार के देखे बर लिखे हे। रतना के मुंह ले या मन ले तुलसी दास अपन स्वामी बर एको ठन टांठ भाखा नइ निकले हे भलुक अपन दाई के हाल ल देखके गुस्साय रखमखाय साहू जी

के मुंह ले करू अउ टांठ शबद कछु घांव निकले हे। एकदम सच बात ह गुरूतुर कहां होथे।

सिरतोन म जे तुलसीदास ह रतना के कारन महान संत कवि बनगे जेकर परसादे कहना ठीक नइ होही फिर जेकर मंतर ला पाके रामायन लिख डरिस, राम ल पागे उही रतना डहर लहुट के नइ निहारिस। को जनि अतका उंच मा चढ़े के बाद घला माया मोह म फेर फंसे के डर ओला डरात रहिस। या फेर लोगन के, समाज के डर के सब का कहहीं साधू अउ नारी संग। का इही पायके संत हिरदे ह घला निठुर चोला बनगे ? भलुक रतना ह अपन जिंदगी ल तेकर खातिर बपरी बना डरे हे के ओकर स्वामी ह जिंदगी भर बर ओला छोड़ के, दुख के समुन्दर मा ढकेल के चल दिस फेर ओहा कैसे होही, का खात – पियत ओदत – बिछात होही – इही फिकर के घुना ह ओला चरत हे अउ बपरी बनगे हे रतना अपन स्वामी के चिंता फिकर मा। कइ ठन बात मन मा आथे – पहिली के जौन रद्दा बताइस उही काबर हेरौठा बनगे। संत जी ह ये काबर नइ सोचिस के ऐसन म आगू चलके कोनो डाहर नइ देखाही। दूसर बात – के संत मन ह सिच्छा देके लोगन के परछो घला लेथें। तुलसी बबा ह इही परछो त नइ लिस के रतना डहर ककरो नजर परथे के नइ परे। कहूं ऐसने होही तब रतना बपरी काव्य साहू जी के लिखे बाद तुलसी दास जी के आत्मा ल सांति पक्का मिलिस होही।

रत्ना ल अपन दुख नइये। ओला त्यागे के दुख घला नइये भलुक ओला गोस्वामी जी के दुख के दुख हे।

रतना ला ए बात के गरब घला नइये के ओकर कहे ले तुलसी दास ह बड़का संत हो गे। ओहा तो इही बात म चुरत हे के अभिन ओकर स्वामी ह जौन दुख पावत हे तेकर कारन मैं हर आंव। जौन चिटिको सुध नइ लेत हे तेकर बारे मा सिरिफ सोंचे नहीं भलुक आगू मा हावे तैसे कहिथे – गहरी गंगा मा देखके नहाहू, बने रद्दा मा आहू जाहू। जमाना खराब हे। ई ल तो प्रेम कथे कि खुद नरक काबर नइ भोगे फेर ओकर प्रिय हा सुखी रहे।

मेहत्तर राम जी ह छत्तीसगढ़ी में सिद्ध हस्त कवि हे। छत्तीसगढ़ी मा कविता लिखे बर सीखे नइये भलुक छत्तीसगढ़ी ह ओला सिखोय हे। छत्तीसगढ़ी कवि के सांस ए ते कविता, कहानी, नाटक, निबंध आदि साहित्य के विधा ह ओकर जिये खातिर बोलइ चलइ ए। बनावटी पन साहू जी के कोनो मेर नइ दिखे – न जिन्दगी मा न ओकर छांव साहित्य मा। कविता मे इंकर सबद गुथना ला देखके छत्तीसगढ़ी के नामी कवि मन ला घला ईरख होवत होही।

साहू जी हा अतुकांत कविता ले जादा तुकांत कविता अउ गीत लिखे हे। ओकरे मंजाय चकचक ले उपके रूप ह रतना बपरी मा दिखब म आय हे। रतना के बिरहा के फोटू खींचे बर कवि ह प्रकृति ल सुन्दर अकन भितिया बनाय हे।

तुलसी दास के नाव लेवइया, जय बोलइया अबड़ बाटुर हें फेर रतना ला दुए चार झन देखिन जेमा साहू जी घला हें। मानस के हंस मा अमृत लाल नागर ह बताय हे के रतना के तारा नाव के एक बेटा होइस – फेर जादा दिन संग नइ दिस। साहू जी ह तारा के पारट ला निभाय हे रतना ला दाई मानके।

ऐसे घला लागथे के तुलसी दास ह सीता के वियोग मा रामचन्द्र भगवान ला रोवाके अपन करतब ला पूरा करिस हे। कहुं रमायन के जगा रत्नावली लिखतिस तब राम अउ सीता के प्रेम ला अतक सुन्दर आदर्स रूप मा कहां भरे सकतिस। मोला लागथे के बैरागी साधू के लौकिक प्रेम ला अलौकिक रूप देय के ढंग ह रतना ला घलो बने लागिस होही।

"रतना बपरी" खंडकाव्य छत्तीसगढ़ी के पहिली दर्जा के काव्य मा गिने जाही अउ लोगन पसंद करहीं – ऐसे मोला बिसवास हे।

01 जुलाई 2001
(मेहत्तर राम साहू के जन्म तिथि मा)

# लोकरंग और वैचारिकता का संबंध

प्रभाकर चौबे

धरती से जुड़े कवि के काव्य में मिट्टी की सौंधी सुगंध होती है और होता है, प्रकृति समाज का हर रूप जमीन, भाग परिवेश से जुड़े भाव के काव्य में होता है, लोक के विविध होता है लोक के विविध से की छवि रंग, विविध रूपों का धान होती है और जीवन संघर्ष, ह्रास, दुख व्यथा और इनके बीच पलता बढ़ता जीता समाज सच्चा रूप होता है, इसमें कहीं बनावट नहीं होती और शब्दों की बाजीगरी के साथ सीधा तादाम्य होता है, उनके सुख दुख का कारण साक्षात होता है और हर व्यवहार उनके साथ जीता है। दरअसल लोक से जुड़ा कवि लोक समाज का ही हिस्सा होता है। वह बाहर से आया हुआ नहीं होती हमारा उन्हें उजागर करने के लिए उसे हमारा पूरा का पूरा उसके पास होता है वह उसे समाज से आपस में अपना अनुभव बांट रहे होते है। इतना जबरदस्त जीवन अनुभव उनके पास होता सहज आ जाता है इसलिए विश्वसनीय काव्य रचा जाता है। कवि मेहतर राम साहू इसी धारा के कवि है। कवि मेहतर राम साहू से ज्यादा भेंट नहीं हुई उन्हें सुनते रहा, कवि रेडियो और सम्मेलनों में उनका अपना स्वर अलग उभर कर आता है। उनकी कविता उनकी पहचान बन गई। रायपुर से प्रकाशित 'छत्तीसगढ़ी' मासिक में पढ़ने मिल जाता। कवि मेहतर राम साहू का प्रथम प्रकाशित काव्य संग्रह ' कउंवा लेगे कान ला। की कविताएं एक ओर सामाजिक बिसंगतियों को पकड़ने की उनकी अद्भुत ताकत का उदाहरण है तो दूसरी ओर लोकरंग की सहज अभिव्यक्ति है। छत्तीसगढ़ कथन मुहावरों की खुशबू बिखेरती संग्रह और दो टूक बात कहने की से क्षमता युक्त भाषा से परिचय कराती है। छत्तीसगढ़ का अपना माधुर्य इनमें प्रस्फुटित हुआ है व्यंग्य है। और व्यंग्य की स्वाभाविकता

से ओतप्रोत है। छत्तीसगढ़ी व्यंग्य में सहज हास्य है लेकिन यथार्थ को उजागर करने में अद्वितीय है।

कउंवा लेगे कान संग्रह की कविता "पलायन ह कहां पूरा होइस " की इन पंक्तियों को पढिए परखिए –

'तब तहीं हा बता तुलसीदास
तोर रमायन ह
कहां पूरा हो सकिस हे
कौरव ह आजे ले जियत हे
हमर रक्त ल पियत हे

सालों पूर्व लिखी कविता आज भी सामाजिक है और कवि के युगदृष्टा होने की पुष्टि करती है कवि लोक से एकदम जुड़ा है उसका बिम्ब प्रतीक, उपमा, उपमान सब आसपास से लिए बाते है।

करम के बेशरम रूख
खड़े हे
मनखे ले
बड़े हे।

इसी तरह शोषण से पीड़ित व्यक्ति की व्यथा और शोषक की चिन्ह उसकी तरफ देखिए –

कोन बहरी
अइस पाउन में
मोखला कांटा बेध दिस
कोन दुश्मन
कोसा ला छेद दिस
जम्मो मन ह निथरगे

फूल बगिया में
मइं उहिकांठा ला खोजत हों।

कवि मेहतर राम साहू की कविताएं पढ़ते हुए करूणा का उदय होता है और शोषण की पंक्तियों के खिलाफ गुस्सा जन्म लेता है। परेशान शोषित जन अपनी दशा पर चिंतित होकर चिंतन करता है –

काबर अंजोर हा
नइ आवय
का हमर मांस हा
बस्सावत हे ?
काबर अंधियार हा
भेंट लागथे
पोठार के
का हमर मांस हा
महमहावत हे।

कवि इन कारणों की तलाश में है जो आमजन तक की पीड़ा का कारण बन रही है उजाला क्यों नहीं आता हैं और कुछ मुटठी भर लोग ही उजाले का सुख भोग रहे।

कवि मेहतर राम साहू की कविताओं में काव्य रस तो है लेकिन ये कविताएं जबरदस्त वैचारिक ऊर्जा से भरी है। जीवन संघर्ष का समग्रता में समझा देने वाली कविता और ज्यादा विस्तार से मूल्यांकन मांगती है। छत्तीसगढ़ी की काव्य परम्परा को समझने में कवि मेहतर राम साहू की कविताएं मार्गदर्शक हैं।

धरती और अपनी मिट्टी के प्रति कवि का इतनी आंतरिक लगाव है

कि मृत्यु के बाद भी वह उसी में लपेटे जाने की कामना व्यक्त करता है –

जे दिन में हरमर जाहूं
मोला कोन्हों किसिम के
नवा कपड़ा झन ओढ़ाहू
धरती दाई के
हरियर दूबी, पाना अउ पतई
मोर मा लपेट देहूं भाई

ऐसी कल्पना लोकरंग में रंगा प्रकृति से सम्बद्ध धरती की गीली मिट्टी में सना कवि ही कर सकता है।

# झोपड़ी में सिकन्दर

रामेश्वर वैष्णव

अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति, विश्व विजय की कामना , अपराजेय शोर्य और बेमिसाल उपलब्धियों के बल पर 'सिकंदर' एक प्रतीक बन चुका है। केवल मुकद्दर के बस की बात नहीं किसी को सिकंदर बना दे या बड़ी जीत किसी को सिकंदर नहीं बना सकती हालांकि ऐसे मुहावरे चल पड़े हैं। सिकंदर वो भी है जिसने परिस्थितियों से कभी हार नहीं मानी मगर किसी पोरस के समक्ष अपनी जीत का दावा नहीं किया और किसी संत को रास्ता देने में अपनी हठी भी नहीं मानी। सिकंदर इन गुणों का नाम है, न कि येन केन प्रकरेण अपना वर्चस्व कायम रखने वाले का। षडयंत्रकारी बना देती है या आडम्बर प्रेमी बना देती है। वह यह भूल जाता है कि अपराधी दण्ड का भागी होता है, षडयंत्रकारी अपने ही जाल में फंसता है और आडम्बर प्रेमी गुमनामी की मौत मरता है। सच पूछिए तो बुलंद हौसलों का नाम ही सिकंदर है, हमारे इर्द गिर्द कई सिकंदर मौजूद हैं मुश्किल यह है हम उपलब्धियों के बल पर मूल्यांकन करें तो झोपड़ी में भी सिकंदर मिलेंगे, घायलों में सिकंदर मिलेंगे और दलितों में भी सिकंदर के दर्शन होंगे। बागबाहरा से साढे चार किलो मीटर दूर ग्राम खोपली के कवि शिक्षक श्री मेहतर राम साहू में भी मुझे एक सिकंदर नजर आया। अस्तित्व बचाने के संघर्ष में जीवन भर पिसा यह छिहत्तर वर्षीय सिकंदर नजर आज भी अपने सृजनात्मक शौर्य से चूका नहीं है, निरंतर धोखा व ठोकरें खाने के बावजूद अपने मानवीय व्यवहार से थका नहीं है और चारों तरफ पसरे स्वार्थ माहौल से घिरे होने के बावजूद अपनी छत्तीसगढी सहजता, सरलता व आत्मीयता से ऊबा नहीं है। प्राथमिक विद्यालय की शिक्षकीय नौकरी में समर्पण भाव से सेवा देने के कारण संपूर्ण इलाके में एक प्रतिष्ठित स्थान बना लेना कोई

कम जीवंतता का प्रमाण नहीं है। विगत एक जुलाई 2009 साहू जी के छिहत्तरवें जन्म दिवस पर अमृत महोत्सव की खुशियां लाई। बागबाहरा की साहित्यिक संस्था द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को अंचल के विख्यात साहित्यकारों ने अपनी उपस्थिति से महिमा मंडित किया है। दरअसल मेहतर राम साहू जी की साहित्यिक सम्पर्क भावना एवं आत्मीयता ने लोगों को जुड़ने पर विवश किया। नगर के साहित्यिक रूचि के बुध्दिजीवियों ने उपस्थिति व सहयोग से आयोजन को अविस्मरणीय बनाने में निर्णायक योगदान दिया । ऐसा बहुत कम हो पाता है साहित्य जगत में कई विख्यात व समर्पित साहित्यकार पष्ठिपूर्ति के औपचारिक आयोजन से भी वंचित रह जाते हैं क्योंकि जमाना आत्म विज्ञान व प्रायोजित हंगामें का है जितना कर ले वो उतना ही बड़ा साहित्यकार। साहू जी ने एक उल्लेखनीय कार्य इस दिन शुरू किया। अपने साहित्यिक गुरू श्री नारायण लाल परमार जी की स्मृति में ग्यारह सौ रूपयों का एक युवा साहित्यकार पुरूस्कार दिया। इस मामले में शायद छत्तीसगढ़ शासन कुछ प्रेरणा ले। इस वर्ष का पुरूस्कार युवा कवि श्री डुमनलाल ध्रुव को प्रदान कर साहू जी ने सहृदयता का परिचय अपनी व्यक्तिगत श्रध्दा को सार्वजनिक महत्व का आधार बनाने की यह अलग कोशिश है। आज जब साहित्यकारों केबीच पुरूस्कार – अनुदान – पारिश्रमिक के लिए झपटी मची हुई है वहां ऐसी कोशिशों के माध्यम से एक ऐसा संदेश प्रतिध्वनित होता है जो भारतीय विराट संस्कृति का उत्सव है। बड़े और धनी लोग इस तरह की उदारता से कोसों दूर पाए जाते हैं। दिल का बड़ा होना, जेब का नहीं दिमाग का विषय है लोग अपनी ही विषय वासना के ऊपर नहीं उठ पाते दिल या दिमाग तक पहुंचे तो पहुंचे कैसे ? ऊपर उठने के लिए परिवार का सहयोग अनिवार्य रूप से अपेक्षित होता है। बिना पारिवारिक प्रोत्साहन के कोई भी व्यक्ति सामाजिक हो नही सकता।

व्यक्ति विशेष के संघर्ष का सर्वाधिक खामियाजा तो परिवार ही भुगतता है। इस मामले में साहू जी के दोनों पुत्रों व एक मात्र पुत्री ने जिस तरह अपने पिताजी के सपनों का साकार करने में अपनी भूमिका अदा की वह प्रशंसनीय है। प्रायः समृध्दि पारिवारिक प्रेम को सोख लेती है और उसकी जगह प्रतिद्वंदिता ले लेती है। ऐसी स्थितियों से घर को उबारना बड़ा कठिन होता है, मेहतर राम साहू जी ने अपने सृजनात्मक विद्वता के साथ–साथ उपरोक्त कठिन संतुलन को बनाये रखा है इसीलिए तो मुझे उनमें एक सिकन्दर दिखाई देता है।

# लोक जीवन और लोकमन के प्रति आत्मीय कवि - मेहत्तर राम साहू

डुमन लाल ध्रुव

छत्तीसगढ़ के लोकधर्मी, कलाधर्मी, प्रयोगधर्मी कवि स्व. श्री मेहतर राम साहू जी, का जन्म रायपुर जिले के ग्राम पाण्डुका में 01 जुलाई 1933 को हुआ था। प्रारंभ से ही यशस्वी साहित्यकार गीतकार श्री नारायण लाल परमार जी का सानिध्य मिलने से श्री मेहतर राम साहू जी के कवि मन में प्राकृतिक दृश्यों की अभूतपूर्व सुषमा के दर्शन करने की बहुत चाह थी और घंटो एकांत में बैठे रहते थे। इसी प्रकृति प्रेम ने उन्हें कवि बना दिया और एक दिन सहसा आप "कउंवा लेगे कान ला" नामक कविता संग्रह के माध्यम से कवि रूप में प्रकाशित हो गए।

कवि मेहतर राम साहू की कविताओं में लोक जीवन और लोकमन के प्रति आत्मीयतापूर्ण भावों का उद्घाटन मिलता है। मेहतर राम साहू की जीवंत भाषा उनको जनता के बीच से ही उपलब्ध हुई है। धरती के प्रति पूजनीय भाव उनकी कविता की विशेषता है। लोक जीवन की शब्दावली युक्त लोक बोल – चाल की भाषा में वे अपनी रचनात्मकता को स्वरूप प्रदान करते हैं। उनकी कविताओं में देश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों का चित्रण मिलता है।

कवि मेहतर राम साहू की संवेदना का केन्द्र गांव ही है कृषक जीवन और उनकी समस्याओं में कवि की सकियता गहरे रूप में व्यक्त होती है। मेहतर राम साहू की हर कविता की जड़ें एक वृक्ष की तरह अपनी मिट्टी में दूर तक व्याप्त रहती है। मेहतर राम साहू की भावुकता आधुनिक समाज की बढ़ती हुई निस्संगता के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में काम

करती है। वर्तमान समाज की विडंबनाओं और हल के विरूद्ध मेहतर राम साहू के आक्रोश को उनकी कविता में परख सकते है। इन सब प्रकरणों को लोक धर्मिता के व्यापक संदर्भ में मेहतर राम साहू ने प्रस्तुत किया है इसलिए लोक अत्यधिक प्रामाणिक हैं।

कपट के तेल म
धोखा के दिया बरत हे,
गरीब - गंवार मनखे
फांफा अस मरत हे।

वे अपनी रचना में ग्रामीण यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं। ठेठ गंवइहा किसान में अपने खेत और खलिहान को लेकर जो धनीभूत भावुकता है, उसका अनुभूत्यात्मक अंकन मेहतर राम साहू ने किया है।

एक गतिशील ग्रामीण चित्र मेहतर राम साहू की इस कविता में उपलब्ध है। वे इन दृश्यों में मुग्ध दिखाई पड़ते है। अपने लोक में आकंठ डुबकर वे लिख रहे हैं। इसका मुख्य कारण उन दृश्यों के प्रति आकर्षण ही नहीं है, बल्कि उसमें अपने को डुबो देने की बात मुख्य है। इस आकर्षण के कारण ही वे "कउंवा लेगे कान ल" जैसी कविता भी लिख सके हैं।

"कंउवा लेगे कान ल" नामक कविता में मेहतर राम साहू सूक्ष्मदर्शी मनुष्यधर्मिता को अंकित करते है। मनुष्य जीवन के हर कोण को स्पर्श करके यह कविता प्रस्तुत हुई हैं। कविता में प्रयुक्त हर एक शब्द भूख के आतंक को व्यक्त करने वाला है।

भूख में बेच खाइन भइया, ठठिया लोटा थारी।
धनवान के घर हा भरगे, ये दुकाल के आये ले।।
गरीब मन के पूंजी झरगे,दुखेच दुख समाये ले।

खोर - गली में लड़का रोवे, चुलहा मेर महतारी।

मेहतर राम साहू की कविता में मिट्टी की सुगंध महकती है। कविता में जहां -- जहां मिट्टी प्रकट होती है, वहां कविता पूर्णता ग्रहण करती है। वस्तु की लघुता के बावजूद कविता पूर्णता का परिचय देती है क्योंकि मिट्टी कविता की थलीय संभावनाओं की रचनात्मक विवृत्ति हो जाती है। लोकजीवन में मनुष्य के साथ चारों ओर का जगत भी आ जाता है। इस कविता के द्वारा मेहतर राम साहू ने "महुआ और कुसुम" की विशेषता को दर्शाया गया है जो एक ही मिट्टी में अनुभवों का द्वंद्व हम देख पाते हैं। मनुष्य के वर्णन न करने के बावजूद लोक की पूर्णता हमारे सामने प्रस्तुत होती है जैसे --

दिन अउ रात गे
महुआ अउ कुसुम के
झगरा मातगे।
बर पीपर दुनों के ठनगे
आमा अमली घलो हा तनगे,
कउंआ ले गिस अरे कान ला
तिर मिर तिर मिर धरिन बान ला

कवि इन पंक्तियों के द्वारा सारी भूमि को स्वर्ग बनाना चाहते हैं। पूर्ण रूप से शांत रूप में जीवन बिताने का संदेश देते हैं, इस महत्वपूर्ण आकांक्षा को कवि वयक्त करते हैं सरस और सक्षम जीवन की उम्मीद करते हैं, इस प्रकार सारी भूमि पर सुख और शांति बनाने में वे तल्लीन दीखते हैं कवि का मन झूम उठता है। मनुष्य के मन में जब सुख और शांति का भाव जागेगा तभी यह भूमि उसके लिए सुंदर बन सकती है। सारी जनता एकता के साथ रहे, तो पूरी विश्व में कल्याणकारी भाव होगा। तभी लोक

कल्याण संभव हो सकता है। यही कवि का सपना है –

भिन अरछा ले डेहरी म
गंगा जल ओइंछ दो
किरण बेटी अवईया हे
हमर तूंहर जिनगी के
पंडवानी गवईया हे।

लोकजीवन में प्रयुक्त होने वाली जीवन पद्धति के लोक दृश्यात्मक रूप कविता में देख सकते हैं। मेहतर राम साहू की कविताओं में लोकजीवन के ऐसे दृश्य समस्त परिवर्तनों के संदर्भ में हम देख सकते हैं। लोकरीतियों का परिवर्तन अनिवार्य भी है। इन परिवर्तनों को लोक पूरी तन्मयता के साथ अनुभव करता है। यही लोकदृश्य लोक की अंतरंगी और बहिरंगी चेतना को सक्रिय बनाता है।

"तुमन राहव देश के खम्भा
भाई - पाटी मिंयार,
टेटका कस मूंड हलइया
हमन हन तियार
सेठरा होत ले चुहक डारो
जइसे लमई कोकड़ा।
श्रृंगार रस की एक झलक देखिये
चिरई जाम आंखी
अउ खोखमा हे मुस्कान
लगथे तोर चेहरा
मोर ले लेही जान

मेहतर राम साहू के जीवन के अनुभवों मेंविविधता है, काव्य के

आस्वाद और भाषा की विविधता का अनुभव वैविध्य से घनिष्ठ संबंध हैं। उनकी काव्यचेतना का आधार मानववादी है। मेहतर राम साहू समाज के अंतविरोध को समझते हैं, इस अंतविरोध से जुड़े हुए अत्याचार और उत्पीड़न का अनुभव करते है। श्रमिक जनता से नाता जोड़ते हैं। देश की साधारण जनता से कवि का लगाव जितना गहरा होता कविता का लोक उतना आत्मीय होता। कवि की संवेदना भी सघन बन जाती हैं। गंभीर यथार्थ से काव्य की जीवनी – शक्ति भी पुष्टि होती। उदाहरणार्थ मेहतर राम साहू की कविता "जनता बनथे बेंदरा" की पंक्तियॉ –

"जनता बनथे बेंदरा, बनथो तुम मदारी
नाचा नचाथो आनी - बानी, जेकर आथे पारी।
फांदे रहव जनता ला, गाड़ा नइते छकड़ा
तूमन रहव देश के खम्भा, भाई पाटी मियार,
टेटका कस मूंड हलईया, हमन हन तियार।।"

कवि को परिश्रम पर गहरी आस्था है। घर बैठे यदि कुबेर का खजाना भी मिल जाए तो कवि को वह स्वीकार नहीं है। बिना परिश्रम और बिना कष्ट के जो प्राप्त होता है, उसमें कोई उपलब्धि या कोई सार्थकता उसे महसूस नहीं होती। अपने एक आरम्भिक गीत में मेहतर राम साहू जी लिखते है।

मंजूर में मोती असन
दुख के डेना ला बच्छर - बच्छर ले झर्रा डारेंव
सुख के छइहां ला
नइ खुंद पाएंव
स्वाभिमान ला
गहिना धर के।

मेहतर राम साहू ने केवल भाषा पर ही प्रयास नहीं किया, बल्कि उन्होंने कई तरह के छंदों को भी अपनी काव्य – यात्रा का आधार बनाया। संभव है वे छंद पहले भी रहे हों, मगर मेहतर राम साहू ने उन छंदों को अपने गीतों के जरिए अत्यंत प्रवाहमयी भाषा का जामा पहनाकर उन्हें बिलकुल नया किया। अपनी इस बात को सुध्घर बनाने के लिए मेहतर राम साहू की रचनाओं के कुछ अंश यहाँ दे रहा हूँ –

गांव - गांव हा सून्ना होगे, राहत काम कमाई में
दुब्बर ला दुख दुन्ना होगे, सुरसा कस महंगाई में,
भूख में बेच के खाइन भइया, ठाठिया लोटा, थारी
धनवाला के घर हा भरगे, ये दुकाल के आये ले
गरीब मन के पूंजी झरगे, दुखेच दुख के समाये ले
खोर गली में लइका रोवे, चुलहा मेर महतारी।

अन्त में मेहत्तर राम साहू जी के व्यक्तित्व -- कृतित्व के साथ स्मृति को सादर नमन....।

# छत्तीसगढ़ के दरद उकेरइया मेहतर राम साहू

चेतन भारती

जेकर रचना में अपन संस्कृति परंपरा अउ लोकरंग के चित्रण होथे ओकर अलगे पहिचान होथे। छत्तीसगढ़ के मुहाटी म सुआ, करमा गीत जइसन लोक गीत, लोक कथा, ददरिया, हाना, जनौला , होरी भोजली, गौरी गौरा, जंवारा जइसन परम्परागत गीत ल अपन कविता के विषय बनइया छत्तीसगढ़ के दरद ल उकेरने वाला साहित्यकार मेहतर राम साहू के नांव कहूं अनजान नोहे, बल्कि छत्तीसगढ़ी साहित्य ल एक उंचाई देने वाला नोहर रचनाकार आय। मेहतर राम जी साहू के नाव सत्तर के दशक में बहुत छाय रहिस। स्व. चैतराम ब्यास संग मोर मुलाकात होइस तब ओ बताइस कि पांडुका म हमर मन के साहित्यिक गोष्ठी बहुत चलीस। नारायण लाल परमार, चैतराम ब्यास, रामप्यारे, उधोराम झखमार के रचना सुनके लोगन मन अबड़ मजा लेवत रहिन। हमन ल साहित्य के रद्दा बतइया नारायण लाल परमार रहिस। ओहा हमन ला प्रेरणा देवत जाय। पांडुका में परमार जी शिक्षक रहिस ऊंकर संगत के लाभ मिलिस। मेहतर राम साहू के रचना परमार जी ला अब्बड़ पसंद आय। साहू जी के रचना छत्तीसगढ़ी पत्रिका म बहुत छपीस ओखर नाव शोर अबड़ होइस। पांडुका गांव में रहिके ऊंकर कविता पोठ होवत गीस। नारायण लाल परमार जी के दिसा निर्देशन मिलत रहिस। मेहतर राम साहू जी एक दिन बाते बात म ये बात मोला बताये रहिस। परमार जी मोर गुरू आय ऊंकर आसिस ले मोर कविता कहिनी बर समय समय म अपन बिचार देवत रहिन। मेहतर राम साहू जी रामचरित मानस के गायक के रूप में रामायणी के नांव ले बागबाहरा क्षेत्र म परसिद्धि पाय हावे। रामायण मण्डली मन के रचिता अऊ तरज बनइया साहू जी प्राथमिक शाला म प्रधान पाठक रहीसे। सेवा निवृत्ति के बाद साहित्य साधना म लग गे। ग्राम खोपली

बागबाहरा महासमुंद म अपन निवास बनइया रामायणाचार्य मेहतर राम साहू जी लघु नाटक घलो लिखे हावे, अब तक ऊंकर कउंवा लेगे कान ला (काब्य संग्रह), हमरेच भीतरी सब कुछ हे, बूड़े म मोती मिलथे जी (कथा लेख), सब परे हे चक्कर म (गम्मत), समीक्षा कृति ऊपर साहित्यकार मन के बिचार अउ सम्मति ल प्रकासित करे हावे भूमिका समीक्षा लिखेया अउ पत्र लिखैया साहित्यकार मन के बात ल सामिल करे गे हावे। बुड़े में मोती मिलथे म पौराणिक कथानक लेके बहूते सुग्घर रचना करे हावे। छत्तीसगढ़ी साहित्य म डुबकी लगाय के बाद मेहतर राम साहू जी के दु भावना संसार म दौड़ लगाय म मिलथे कि छत्तीसगढ़ म सोसन अउ भ्रष्टाचार, अत्याचार कतको गुना बाढ़ गे हे। सबो कोती अपराधी तत्व के बोलबाल होवत हावे आज राजनैतिक पतन होगे हे। तभो ले जनता ह चेतय नीही 'जनता बनथे बेदरा बनथौ तुम मदारी' नाचा नचाथौ आनी बानी जेकरे आथे पारी उंकर कउंवा बानी लेगे कान के रचना में व्यंग्य ह तो देखते च बनथे।

पहिली कविता में बसंत के वर्णन करे हावे कुर्रा अउ तेन्दू उमंग मा हांसिन मस्ती अउ पिकरी संग मा नाचिन, बड़े बिहिनिया ले डेरौटी म गंगाजल ओइंछ दव किरण बेटी अवइया हे नवा अंजोर अवइया हे अन्न माता के खुशबू बिहनिया च अवइया है। गरीबहा मनखे ल कोनो संग नइ देवय ओखर मुश्किल के घड़ी म कोन्हों उनला पंदोली नइ देय चाहे काबर अंधियारी गरीबहा मन ला घेरे हावे ओहा चारो कोती ल दबा के रखे हावे। छत्तीसगढ़िया मन मे काकरो तलवा चाटे के आदत के अत्याचार म जिनगी ह खींचातानी म परगे हावे। कि ओमन कोनो दिन उड़ेरा बना के जम्मो बइमान मन ल हवा बरोड़ा बन के उड़ा दे जाही। इहां के जनता के सिधवापन ह उंकर कमजोरी बनगे हे जेखर कविता उंखर होगे म अंकित हावे।

भलमानस ह/मछरी कस बिस्सर होगे
सिधवापन ह/मुरइ कस पुराइन होगे
सहता ह/कमल फूल के पुराइन होगे

मुंहे मुंह मा करथे गोठ/हिरदे मा चुपराय हावे मिरचा अउ सोंठ

आज के लोगन के राक्षसी प्रवृत्ति ल देख के कवि मेहतर राम साहू के डारा हिरदे भरभरा जाथे। कविता के दुवार म कांटा जागे हावे जनता तो बेबस नियाव ल घला नइजाने, भले ही पुरखा मन कटा जाय। येखरे कारन कवि मेहतर राम साहू ह स्पष्ट शब्द मं चेताय हावे...

कोख के उधारी, अऊ कुथरी के तेल
दूनों परथे भारी, बात कभू झन पेल
जुन्ना होगे बाजा, जुन्ना होगे नाचा
नवा जमाना आगे देख के चल ग भांचा

समाज म कती डाहर ले कांटा चुभाये जात हावे। किसान जिनगी भर काम करत करत ओखर लहू सेठरागे ओखरे मास घला कोचरागे। किसान अभाव म जियत हावे। पथरा तरी हाथ ह चपकागे।

कैकई उंकर लघु प्रबंध काव्य आय जेमा छत्तीसगढ़ लोक संस्कृति के बात ल सकेल के अपन ये काव्य ले उचहा बनाय हावे। पहिली बात सरसती दाई के महिमा गावत कैकयी के दरद ल अपन काव्य के विषय बनाय हावे। कैकेयी रानी रामचरित मानस में एक अपेक्षित पात्र हावे जेन ला तुलसीदास जइसन भगत साहित्यकार ह घला ज्यादा वर्णन नई लिखे है तभे तो कवि मेहतर राम साहू लिखथे ...

अटकर पंचे सोरा आना, नइ जानव हम खेदे जंवारा
जेला बड़का कवि हा बेड़िस हमर लिखे के नइये पारा
कैकेयी के घर उजर गे ओखरे बिसाय भरत ओखर अपमान

करीस।

देवी देवता मन अपन अपन कारज सिधो इन। मंथरा के बात ल मान के माता कैकेयी बाद म बहुत पछताथे। ये सब समय के चक्कर आय। जेन हा ओकर ओरछोर म आइन ओहा तो फंस बे कर ही। कैकयी जइसन पात्र ऊपर लघु काव्य बहुत सरल शब्द म लिखना सहज नइये। कवि हा लगथे एके घांव म पूरा काव्य ल लिख डारिस। चार चार डाड़ के कविता पूरा काव्य म अंकन हावे।

होही अंजोर उंकर तीसर काव्य संग्रह आय सताइस कविता संग्रहित हावे। उंकर कविता टेचराही के व्यंग्य देखव

मुंह बांधे परे कतेक, अइता ला डार के
फूंक-फूंक के चुलहा में, मानस चुरोथन
जम्मो पकवान दे के पेट ल करोथन
मतलब ह सिंध गे तहान चल दिस डकार के।

इंकर जम्मो कविता के अलगे बानगी हावे। कहुं कविता म किसान के मेहनत अऊ ओकर मया के गोठ, गांव गोठान हर बिंदावन हे। ये धरती मइया साक्षात देवी हावे। खेती खार हा पोथी पुरान हावे। किसान राम लखन के जोड़ी बन के खेती – खार ल कमावत हावे। तुलसी के कविता खेत में पेड़ म राहेर के पौधा बन के चौपाई गावत हावे अइसन सरल भाषा म कविता लिखइया मेहतर राम साहू जी ल याद करे के मतलब हे

छत्तीसगढ के हीरा कवि ल याद करना।

## होही अंजोर अंतस के रस ले भरे गगरी

गणेश यदु

साहित्यकार मेहतर राम साहू जी के "होही अंजोर" दूसर प्रकासित कृति आय। एक पहली सन्1978 म उंकर कविता के पहला संकलन "कउवा ले गे कान ला" प्रकासित होय रिहीस । एक्काइस बच्छर पाछू"होही अंजोर " कविता संकलन के भूमिका लिखत स्व. हरि ठाकुर जी लिखे हे के "ए संकलन म छत्तीसगढ़ म सोसन, भष्टाचार अउ अतियाचार केउ गुना बढ़गे हे । हर क्षेत्र म अपराधी तत्व के बोलबाला हे। अउ सहत हन। आजादी के बाद राजनीति अउ अरथनीति के लागातर नैतिक पतन होवत हे। छत्तीसगढ़ के जनता के करलई हे। मेहतर राम साहू ओसने संवेदनशील कवि आय ।"

स्व. हरि ठाकुर जी ए कथन ह साहू जी सोरा आना सच लगथे। साहूजी के "कउवा लेगे कानला", "होही अंजोर", "मया के बंधना" हरमेच भीतरी सब कुछ हे, "बूड़े म मोती मिलथे जी " , "सब परे हे चक्कर म"अउ बिस्नु दरसन " किसाब मन म उंकर संवेदन शीलता ह महसूस करे जा सकत हे।

"होही अंजोर" मेहतर राम साहू के चउवन ठन कविता के संकलन आय, जेमा उन हांसी वियंग, राजनीत, सोसन, भ्रष्टाचार सामाजिक अउ राष्ट्रीय सरोकार उपर वि अयन कसम चलाये महात्म बताय हे।

"घर बइठे बृंदावन गोकुल, घर बइठे हे कांसी ।
ये माटी ल तीरथ जनो नइ मानो त माटी।।

हमर छत्तीसगढ़ म मितानी के बड़ महात्तम ह, तभे ले सग भाई के

बरोबर दरजा मिले हावय। साहू जी अपन तुलसी दल कविता के माध्यम ले सामाजिक सरोकार ल साबित करथे–

तै बइठे ल आबे तुलसीदल।
मोर कुरिया म बइठे ल आबे।।

छत्तीसगढ़ महतारी के कोरा अउ उज्जर हिरदे के उद्‌गार ल ए कविता म साहू जी बियक्त करथे।

"मोर छत्तीसगढ़ के बज्जर हावय कोरा।
तन ह करिया भले हमर हे, मन ह हावय गोरा।।

साहू जी ह छत्तीसगढ़ के संस्कृति, परम्परा अउ खेती किसानी उपर

घलो संकलन म सुग्धर ढंग ले रचना करे हावय। माटी के महिमा बतावात ए कविता .......

" नांगर जोतत राम लखन ह, होगे हे बनवासी।
ये माटी ल तीरथ जानो, नइते मानो माटी।।"

आज के जुग म मनखे ह मनखे बर अउ इहां तक के भाई ह भाई के बइरी बनगे हावय। सुवारथ बर मनखे अपन नता – गोता ल तको तिरिया देथे। ए कविता म ए भाव के एक झलक ....

" हिरण्य कश्यप कंस बरोबर, होवत हावय कसाई।
अब छाती म दार दरत हें, भाई मन के भाई।।

छत्तीसगढ़ ल धान के कटोरा कहिथें फेर गरीबी, बेकारी ह इहां के लोगन मन के पाछू परे हे। कवि ह काम बुता क तलास म पलायन करइया लोगन बर घलो एदे कविता ल रचे हें ......

गांव - गांव सून्ना होगे, शहत काम कमाई में।
दूबर ल दुख दून्ना होगे, सुरसा कस मंहगाई में।।

छत्तीसगढ़ राज बने के बाद घलो "छत्तीसगढ़ मन अनियाव सोसन अउ भ्रष्टाचार के जांता म आजघलो पिसावत हे। नेता मन उपर साहू जी के ए बियंग कविता .....

"जनता बनथे बेंदरा, बनथौ तुम मदारी।
नाच नचाथौ आनी - बानी, जेकरे आथे पारी।।

हमर छत्तीसगढ़ म अंकाल — दुकाल परत रहिथे, तेकर सेती लोगन पलायन करे बर मजबूर होजाथे। एकर पहिली जिनगी जिये खातिर अपन गहना गुरिया लोटा थारी तको बेच डारथे। अइसन भुखमरी अउ गरीबी के चित्रन साहू जी ए कविता म करे हे ............

भूख म बेंच खाइन भइया, ठठिया लोटा, थारी
धनवान के घर ह भरगे, ये दुकाल के आये ले।।
गरीब मन के पूंजी झरगे, दुखेच दुख समाये ले।
खोर गली में लइका रोवे, चुलहा मेर महतारी।।

भारत माता बर अपन घेंच कटइया, बलिदान होवइया, बीर सहीद बलिदानी मन ल साहू जी अपन सरधा के फूल अरपित करें हें.....

तपत कुरू मिट्टी के कहवइया ह सुखपावे।
हाथ जोर केकरे मनस्ते, ते गोली ल खावे।।

मेहतर राम जी ह जन के कवि आय। इंकर कविता म लोक जीवन के संगे संग देस परेम, राजनीति अउ प्रकृति बरनन घलो देखे बर मिलथे। ' होही अंजोर' कविता संकलन म कवि ह अंतस के पीरा, अपन भावना ल उदगरे के कोशिश करे हावय।

छत्तीसगढ़ राज म घपटे, सोसन भ्रष्टाचार अउ अनियाव के अंधियारी ल मेटाये खातिर, 'होही अंजोर' ह कम से कम दीया के अंजोर

अवस के बनही। अइसे मोर कामना हावय।

# कऊंआ ले गे कान ला - एक दृष्टि में

नम्रता श्रीकुमार सिंह

फिंगेश्वर (राजिम) की निवासी होने के कारण कहें या स्व. हरिठाकुर से पारिवारिक संबंध होने के कारण श्री मेहत्तर राम साहू ये नाम मेरे लिए अपरिचित कभी नहीं रहा बावजूद इसके साहू जी का सम्पूर्ण परिचय मुझे सुप्रद्धि साहित्यकार नारायण लाल जी परमार के सानिध्य में प्राप्त हुआ। जब मैं कांकेर में निवासरत थी, अक्सर परमार जी से मिलना होता था और जब भी छत्तीगसढ़ी काव्य संबंधी चर्चाएं चलती साहू जी का नाम अवश्यमेव आता। परमार जी उनकी सहज सरल किन्तु मुहावरेदार भाषा का जिक करना नहीं भुलते थे।

एक लम्बा समय गुजर गया, परमार जी भी नहीं रहे, मेरा भी कार्य क्षेत्र बदल गया इतने वर्षों पश्चात अचानक डुमन लाल ध्रुव ने साहू जी की कृति "कऊँवा ले गे कान ला" उपलब्ध करा कर आलेख लिखने का आग्रह किया। यह जानते हुए भी कि इतने वरिष्ट कवि व उनकी कृति पर लिखने में मेरी कलम अभी समर्थ नहीं है,श्रद्धेय साहू जी की रचनाओं के अध्ययन, मनन व लेखन का लोभ में संवरण ना कर सकी।

श्री मेहत्तर राम साहू जी की कृति "कऊँवा ले गे कान ला" की एक – एक कविता पढ़कर ये महसूस ही नहीं होता कि इसका प्रकाशन वर्ष 1978 है। अचरज होता है कि आज से तीन दशक पूर्व प्रकाशित व उसमे भी पहली की रचित ये कविताएं पाण्डुका जैसे छोटे से ग्राम में जन्में कवि की है। संग्रह की प्रथम रचना "कऊँवा ले गे कान ला" से ही कवि के बिम्ब चित्रण में खांसी पैठ का पता चलता है।

ग्रामीण क्षेत्र में पले बढे इस कवि की कलम ना केवल ग्राम्य जीवन के दुखदर्द को पहचानती है बल्कि उनके श्रम व समय की कीमत भी करती

है।

"चलो अपन मिहनत के साथ मा
तिलक उगावन
बुता ला जल्दी सिरा लो
मइलहा मन ला उजरा लो
आय मौका हा हर जाही,
पछताय बर पर जी"

उन्होंने जो कुछ लिखा पूर्ण ईमानदारी से लिखा लोकगीतों की मिठास व दर्द दोनो ही उनकी कविताओं में समाहित है यूं भी कविता ना तो किसी वर्ग विशेष के लिए होती है ना ही किसी भाषा व क्षेत्र के लिए वह तो अपने समय को मुखरित करती है कवि जिस समाज में पलता बढ़ता है वह उस समाज के गुणदोषी को अपनी लेखनी के माध्यम से प्रतिबिम्ब करता है तभी तो साहू जी भी "काबर" कविता के माध्यम से समाज से प्रश्न करते दिखते है तो कहीं नवा अंजोर जीने व सुख – दुख बॉटने की बात करते है तो कहीं "आदत नइये" के जरिये शिव बन अकेले विषपान क बात भी सोचते है।

अपने आसपास के परिवेश व समाज से ऊपर उठकर इनकीकलम ने देश के लिए भी लिखा है कहीं चिंता व्यक्त की है तो कहीं गौरवान्वित हुअ है –

जऊहर होगे
रूआं ह मर मरा जाथे
लंगू झंगू, कइसे होइस।

यही कारण है कि उनकी सोच देश के लिए एक नये महानायक की कल्पना करता है और कहता है –

"रमायन ह कहां पूरा होइस"

कवि को हमेशा से ही समाज में अन्य लोगो की अपेक्षा अधिक

संवेदशील व भावनाओं की धरातल में या स्वप्न लोक में जीने वाला समझा जाता है किन्तु वास्तविकता ये है कि वह अपनी कविता के माध्यम से समाज को नव जागरण का संदेश देता है। व्यवस्था के दोषों को उजागर करता है, तभी तो कवि ने की अउ बंदी का "हिसाब" करता है।

कवि किसी एक भाषा क्षेत्र व समाज का ना होकर सम्पूर्ण मानवता को समर्पित होता है यही कारण है कि श्री मेहत्तर राम साहू पर भी देश के राजनैतिक सामाजिक व धार्मिक परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। किन्तु क्षेत्र प्रेम से वे अपने को अलग नहीं कर सके है छत्तीसगढ़ की धरती, यहाँ की प्रकृति वातावरण, ग्रामीण परिवेश से अत्यन्त प्रेम ही उनके प्राकृतिक चित्रण को जीवन्त बनाता है। तात्कालिन अभाव ग्रस्त जीवन की झलक भी उनकी कविताओं में दृष्टव्य है –

"जूझत, जूझत," व कंइसे होइस

आजादी के बाद की स्थिति के लिए भी ना सिर्फ वे सोचते है बल्कि इस स्थिति के कारणों की तलाश भी करते है –

"उही कांटा ला"

कवि सिर्फ सामाजिक राजनैतिक चेतना का ही कवि नहीं है वरन् काव्य के एक बेहद प्रचलित व महत्वपूर्ण विषय "प्रेम व श्रृंगार" से भी कवि अछूता नहीं है। तभी तो उसकी कलम कहीं "सुवारथी संगी" लिखती है, तो कहं "समोख डारो अंग भर" और चुलकगे मन व "सुरता" जैसी प्रेमराग में डूबी रचनाएँ कहती है।

इन सबके अतिरिक्त मौलिक उपमाएँ देने वाला यह कवि मुहावरों के प्रयोग से भी पीछे नहीं हटता ना केवल प्राकृतिक सौंदर्य पर इन्होंने कविताएं लिखी है। बल्कि दार्शनिकता की जमीं पर भी इनकी रचनाएं (अण्डी के जर और कहूं दिन) बखूबी मुखरित हुई है।

देश, समाज, क्षेत्र की समास्याओं से जूझती प्रश्न करती, प्रेमराग व प्रकृति पर चलती ये लेखनी संसार के शाश्वत सत्य मृत्यु से भी नहीं घबराती तभी तो कवि वसीयत करते है, अपनी अन्तिम इच्छा जाहिर करते

है, इनका विश्वास है कि –

चिता ह हॅंसत - हॅंसत बरही

आज छत्तीसगढ़ में बहुत से रचनाधर्मी है सभी अपने – अपने तरीके से माटी व साहित्य की सेवा मे लगे हुए है किन्तु जैसा कि परमार जी ने स्वयं इस संग्रहणीय काव्य संकलन के आमुख में लिखा है – "सारी दुनिया को एकता और स्नेह" का पाठ पढ़ाने वाला साहित्यकार यदि देत तक घृणा को नैवेद्य की तरह मानता रहेगा तो छत्तीसगढ़ की माटी उसे कभी माफ नहीं करेगी। हर एक को अपना दाय – भाग मिलना ही चाहिए। श्री मेहत्तर राम का कवि आत्मविश्वासी साहित्यिक बिरादरी से केवल अॅंजूरी भर स्नेह का ही आकांक्षी है –

साहित्यिक बिरादरी द्वारा स्नेह दिये जाने वाले इस अॅंजूरी भर स्नेह में अपनी भी आत्मीय स्मृति समाहित करते हुए मैं श्रद्धेय साहू जी को

अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

# आत्मविश्वासी कवि मेहत्तर राम साहू

डॉ. विकास कुमार अग्रवाल

वैसे तो मेहत्तर राम साहू आज के समय में साहित्यिक जगत में किसी परिचय का मोहताज नहीं है। लेकिन एक छोटा सा औपचारिकता भरा परिचय मैं रखने की दृष्टता कर रहा हूँ। 01 जुलाई 1933 को पांडुका की धरती पर पैर रखना अलाल राम और सुकवारो बाई साहू के कुल में। 1952 से लगातार साहित्य सृजन में लगे रहे और छत्तीसगढ़ी साहित्य रचना की लगभग सभी विधाओं में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की। लोकगीत, लोककथा, सुआ,ददरिया, हाना, बिसकुटक, जनौला, डंडागीत एवं लोकधर्मी गीतों के साथ -- साथ सुगम गीतों एवं रचनाओं से छत्तीसगढ़ी भाषा को सुसज्जित किया।

एक और क्षेत्र जिसमे बहुत ही कम साहित्यकार को उपलब्धियाँ हासिल होती है वो है लोककला मंच। और यह अकाट्य सत्य है कि जब कोई साहित्य हृदय लोक कला अथवा दृश्य साहित्य से जुड़ता है तो जन मानस पर वह अपना पागलपन छोड़ जाता है। और अगम मजबूर हो जाती है उसके पागलपन का अपनो और उसके साथ चलने को। ऐसा ही हुआ मेहत्तर राम साहू के जीवन काल सन् 1982 में तुलसीदल लोक कला मंच द्वारा। अंचल में एक सांस्कृतिक उथल -- पुथल मचा देने का कार्य इस मंच ने किया और अविभाजित मध्यप्रदेश शासन ने इसे पुरस्कृत किया।

बहरहाल आज मैं जो कुछ कहना चाह रहा हूँ वो मेहत्तर राम साहू की साहित्यिक जीवन यात्रा के कुछ पड़ावों की एक सुन्हरी किरणों के बारे में। "कउंवा लेगे कान ला" 1978 में काव्य संग्रह के रूप में पाठकों के मध्य आयी। 80 के दशक में छत्तीसगढ़ी संग्रह का प्रकाशन अपने आप में

बहुत दुस्कर कार्य था। परन्तु यह संभव हुआ। सामाजिक उलझनों से सजायी हुई यह कृति एक शंखनाद करती है समरसता को पाने वालों के लिए —

भलमनसही ह, मछरी कस बिन्सर हो गे
सिधवापन ह, मुरइ कस पढ़ाइन हो गे
सइता ह, कमल फूल के पुराइन हो गे

और अतीत के पन्नों में जब मेहत्तर राम साहू ने देखा कि —

जिहां के माटी बर बेर बेर तरसे हे भगवान
जुर मिल के चलो,खोजव संगी,
गंवा गे हे हिन्दुस्तान,

इन पंक्तियों ने निश्चित रूप से सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक विरासत को याद किया है। और प्रेरणा भरती है कि आम जनता को अब और सजग रहना है। साहित्यिक सुंदरता "कउंआ लेगे कान ला" में है जेसे लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग बानगी देखिये —

जिहां - जिहां गुर, तिहां - तिहां चांटा
गुर सिरागे, चॉटा के नेम थिरागे

इतना ही नहीं, जब रचनाओं में सुसी बुतागे, तेन्दू सिथा, डफड़ा बाजा, मुहुलुकवा, चिची डबकना आदि शब्द आते हैं,तो आम छत्तीसगढ़िया आदमी इन कविताओं का कायल हो जाता है।

"बुडे म मोती मिलथे जी" सदी के अन्त में अर्थात सन् 2000 मे प्रकाशन आयी 42 आध्यात्म व पुराणों से प्रेरित यह कथा संकलन देखने व पढ़ने मे जातक कथा का रूपान्तरण लगती है लेकिन जब हम इसे अपनी भाषा मेंपाते हैं तो लगता है कि यह हमारे जीवन का एक पहलू है। एक जीवन दर्शन है जिसे पाकर हम नैतिक एवं व्यवहारिक रूप से प्रबल हो सकते है।

"होही अंजोर" 1999 गीत संग्रह के रूप में हमारे बीच आया। शीर्षक से स्पष्ट हो जाता है कि कवि का मन किसी न किसी पीड़ा से

व्याप्त है और उसे सुखद अनुभूति की आशा है पीड़ा देखिये –

धान कटोरा, छलकत राहय
दूध के धार बहावय
सबके जिनगी हांसत राहय
सत ह इंहा नहावय
मोर गंवइहा पांडो घर मन
खंडहर दिखथे।

"होही अंजोर" में ऐसे ही 54 गीतों के माध्यम से मेहत्तर राम साहू ने अपनी पीड़ा व्यक्त की है और सभी गीतों में पढ़ने वाले को अपनी व्यथा नजर आती है। यही इस संकलन की सफलता का प्रमाण है। और भी रचनाएं है जिनका जिक करना मै लाजमी समझता हॅ। जिक करना इसलिए कि उन कृतियों के अंदर प्रवेश कर पाना शेष है। और अंदर प्रवेश कर पाना इसलिए कि सागर को तैरकर पार करना आसान है। किन्तु उस सागर में गोते लगाकर गर्भ के खजाने को ढूंढ़ना आसान नहीं है। अभी खजाने की खोज जारी है। अतएव "मया के बंधना" – 1999 "हमरेच भितरी सब कुछ हे" – 1999, "सब परे हे चक्कर म" (गम्मत) – 2011, "कैकेयी" (लघु प्रबंध काव्य) 2004, "रतना बपरी", "विष्णु दर्शन" (कथानुवाद) और "राजिम लोचन– मैं तप रहा हूँ"।

बस इतना ही .... ।

# जीवन परिचय



नाम – डुमन लाल ध्रुव

जन्म – 17 सिसम्बर 1974

जन्म स्थान – मुजगहन, धमतरी

शिक्षा – एम.ए. (तबला) एम.ए. भारतीय कला का इतिहास एवं
संस्कृति इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़
छत्तीसगढ़ी लोक कला के प्रबल पक्षधर

रचना – देश के प्रतिष्ठित पत्र –पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित

आकाशवाणी – गीत, कविता, कहानी, नाटक, वार्ता का नियमित प्रसारण

रूपक – 1857 की रणभेरी छत्तीसगढ़ स्वर 10 एपिसोड का धारावाहिक आकाशवाणी रायपुर से प्रसारण अनेक शोध प्रबंधों में लेखांश उद्घृत

शोध कार्य – छत्तीसगढ़ में हिन्दी गीतकारों की दिशा और दशा

प्रकाशित कृति –
पैदल जिन्दगी का कवि : नारायण लाल परमार
(व्यक्तित्व – कृतित्व पर केन्द्रित)
अंजोर बांटे के पहले (गीत संग्रह)
भाषा के भोज पत्र पर विप्लव की अग्नि ऋचा : मुकीम भारती
(व्यक्तित्व – कृतित्व पर केन्द्रित)
खिड़की खुली रखिये
छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक परिदृश्य
अमरित बांटिस जग ला : भगवती लाल सेन
(व्यक्तित्व – कृतित्व पर केन्द्रित)

सम्मान –
कला साधना सम्मान ,उज्जैन
साहित्य सृजन सम्मान, सिमगा
रानी दुर्गावती सम्मान, रायपुर
संगम साहित्य सृजन सम्मान, मगरलोड
कला वैभव सम्मान लायन्स क्लब, धमतरी
सृजन श्री सम्मान भिलाई
नारायण लाल परमार सम्मान प्रथम युवा लेखक बागबाहरा (महासमुंद)
साहित्य रत्न सम्मान गुरूर (दुर्ग)

सम्प्रति –
डुमन लाल ध्रुव
प्रचार – प्रसार अधिकारी, जिला पंचायत, कांकेर
मोबाईल 94242–10208